बाल भारती

मार्च 2005 1948 से बच्चों की संपूर्ण पत्रिका पृष्ठ 52 मूल्य : 7 रुपये



शीर्षक बताओ

मार्च 2005



चित्र : टीना नियोगी

25 मार्च 2005 तक इस चित्र का शीर्षक पृष्ठ 32 पर बने कूपन पर भरकर भेजें। अपना पता साफ-साफ लिखें।

शीर्षक बताओ प्रतियोगिता (अक्तूबर 2004) का परिणाम

पुरस्कृत शीर्षक है:

आओ बच्चो हम सब मिलकर आज एक कसम खाएं।
मिलकर वृक्ष बचाएं, वातःवरण स्वच्छ बनाएं॥



प्रेषक :
गुंजन राय (13 वर्ष)
ए-1, मिन्टो रोड, सरकारी प्रेस के सामने
नई दिल्ली-110002

बाल भारती

1948 से बच्चों की संपूर्ण पत्रिका

वर्ष 57 : अंक : 10 फाल्गुन-चैत्र 1926-27 मार्च 2005

परिचर्चा एवं कहानियां :

होली में बोली बच्चों की टोली	शिप्रा सिंह	5
दो अनोखे भाई	ग्रिमबन्धु	9
काश, ऐसा दिना आता	मो. अशरफ खान	14
विटामिन की महिमा	डॉ. प्रदीप मुखोपाध्याय 'आलोक'	29
बात हिसाब की	मदन 'राज'	33
हरखू की होली	शिवनारायण सिंह	44





कविताएं :

रंग नहीं हों बैर घृणा के	जगदीश ज्वलंत	4
आया होली का त्योहार	यशवंत गर्ग	13
होली का हुड़दंगा	डॉ. देशबन्धु 'शाहजहांपुरी'	24
खेलें ऐसी होली	मो. साजिद खान	35
फेल हुई स्कीम	प्रभा किरण जैन	36
सपने	डॉ. अश्वघोष	40

लेख :

वेदों में विद्या का महत्व	अखिलेश झा	16
लील गईं लहरें जीवन	देवेन्द्र मेवाड़ी	19
राग और ताल	कृष्ण कल्कि	37
दादा साहेब फाल्के पुरस्कार	सुलोचना गुप्ता	43
नायकों पर भारी खलनायक	विश्वनाथ गुप्त	47

रंगीन मध्य पृष्ठों पर :
- होली की पहेली

नियमित स्तंभ :

- विज्ञान मंच : 41
- खेल क्विज़ : 42

संपादक : विभा जोशी
सहायक संपादक : सुविधा कुमरा
टेलीफोन : 23387038
विज्ञापन तथा प्रसार व्यवस्थापक :
जगदीश प्रसाद (फोन : 26108979)

आवरण चित्र : सर्वेश
चित्रांकन : मनु मार्टिन एवं दुर्गा दत्त पांडेय
संयुक्त निदेशक (उत्पादन) :
एन.सी. मजूमदार
वेबसाइट : www.publicationsdivision.nic.in

हमारी बात



यूं तो हमारा देश अनेक पर्वों और त्यौहारों का देश है लेकिन होली में जो अनूठापन है वो और किसी त्यौहार में कहां। किसी ने ठीक ही कहा है कि होली न तो दीवाली जैसा खर्चीला त्यौहार है और न ही हमारे लिए वेलेंनटाइन डे जैसा अजनबी। अंजुरी भर अबीर-गुलाल और दिलों में ढेर-सारा प्यार लिए यह रंग-भरा पर्व सारे भेदभाव दूर कर दुश्मनों को भी मीत बना लेने का दम-खम रखता है। तो मान गए न बच्चो, रंगों की ताकत को!

बच्चो, यह अंक होली के रंगों में तो भीगा है ही, साथ ही एक और रंग है इस अंक में; वह है जीवन में अचानक आ जाने वाली प्राकृतिक विपदाओं का रंग। इस अंक में प्रकाशित लेख *लील गईं लहरें जीवन* हमें जीवन के उन काले और भयावह रंगों से भी परिचित कराता है जो कुछ ही पलों में हंसती-खेलती बस्तियों में तबाही के मंजर खड़ा कर देते हैं और पीछे छोड़ जाते हैं अपनों से बिछड़े, बेघर हुए हजारों लोगों को। इन बेघर हुए लोगों में वे बच्चे भी शामिल होते हैं जो कुदरत की इस मार से अपने माता-पिता की दुलारभरी गोद से वंचित हो जाते हैं।

बच्चो! इस बार इस रंगोत्सव पर हम ऐसे सभी बच्चों के लिए दुआ करें कि उनके जीवन में छाए काले और भयावह रंगों की घटा छंट जाए और खुशनुमा रंगों की बहार उनके जीवन को फिर से महका दे।

तो चलो, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ हम सब मिलकर इस अंक की पहली कविता गुनगुनाएं :

रंग नहीं हों कोमल मन पर
दहशत भरे प्रभाव के
रंग रंगें हम अपनेपन के
त्याग-समर्पण भाव के।...

आपकी बात

'बाल दिवस विशेषांक' के रूप में आपका नवम्बर का अंक मिला। हमारे पास प्रत्येक मास 'बाल-भारती' का अंक आया करता है और इसके आगामी अंक का हमें सदैव इंतजार बना रहता है।

इस अंक में 'हमारी बात' में जो रमापति शुक्ल जी की कविता आपने लिखी, वह बड़ी प्रेरणादायक लगी, फूल जैसे बच्चों के साथ सदा मृदु व्यवहार ही हो—ऐसा भाव कवि हृदय ने व्यक्त किया है। इसके अलावा राष्ट्रपति जी के विचार और कई कहानियां एवं लेख देकर आपने इस अंक के लिए अच्छी मेहनत की है—धन्यवाद।

विशेष—*'वेद गाथा'* और *'संगीत की आत्मा'* से परिचित कराने वाले लेखकों को बहुत धन्यवाद।

—राम हरि कुञ्ज, पो.बॉ. नं. 14, वृन्दावन, मथुरा (उ.प्र.)

हमें अक्टूबर अंक की पहली प्रति प्राप्त हुई है। 'बाल भारती' के इस अंक के बीच के पृष्ठों पर छपा 'एथेंस के सितारे' काफी आकर्षक लगा। इस अंक में *वे सफल कैसे हुए, हम होंगे कामयाब, वचन का पक्का* कहानियां मैंने अपने मित्र को भी पढ़ाईं। मेरे मित्र ने भी इस पत्रिका को पसंद किया। यह कहानियां बच्चों को सही राह दिखलाती हैं। इस अंक में छपी लाल-बहादुर शास्त्री जी का प्रेरणा प्रसंग, हमें सच्चा जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

—शंभु कुमार, परिहार, सीतामढ़ी (बिहार)

भूल सुधार

फरवरी अंक में पृष्ठ 19 पर दिए गए प्रेरक प्रसंग के लेखक का नाम भूलवश प्रकाशित नहीं हो पाया। लेखक का नाम है—हरनारायण महाराज



मैं आपकी पत्रिका 'बाल भारती' का एक नियमित सदस्य तथा पाठक हूं। लेकिन यह पत्रिका मुझे दो महीनों से पढ़ने को नहीं मिली क्योंकि आपके कार्यालय से मुझे 'बाल-भारती' की जगह 'आजकल' उर्दू भेज दी गई। ऐसा मेरे साथ पहले भी हुआ था लेकिन शिकायत करने पर सब-कुछ ठीक हो गया। अभी फिर यही बात नवम्बर तथा दिसम्बर की प्रति के साथ हुई। मैं चाहता हूं कि मुझे यह प्रति 'बाल भारती' के रूप में मिले। अत: इस बात का ध्यान रखेंगे।

—आकाश कुमार, अर्जक निवास, जगन्नाथपुरी, बरमसिया, कटिहार (बिहार)

लेखकों से निवेदन

हम 'सफलता की कहानी' नाम से एक नवीन स्तंभ शुरू करने जा रहे हैं। इसके अंतर्गत आप समाज में अपने आस-पास उपस्थित ऐसे युवाओं की सफलता की सच्ची कहानियां हमें प्रकाशनार्थ भेज सकते हैं जिनका जीवन अन्य लोगों, विशेषकर बच्चों के लिए अनुकरणीय और प्रेरणादायी हो।

रंग नहीं हों बैर-घृणा के

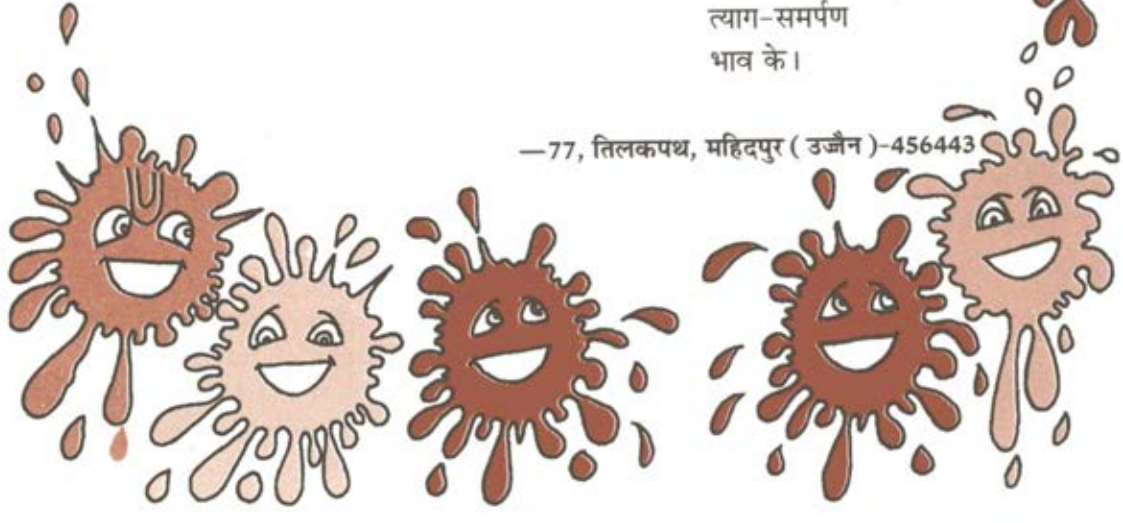
—जगदीश ज्वलंत

रंग नहीं हों
बैर-घृणा के
हिंसा के,
अलगाव के
रंग रंगें हम
मानवता के
शीतल रिश्ते
छांव के।

रंग नहीं हों
छल छद्मों के
राग द्वेष
दुर्भाव के,
रंग रंगें हम
हुरियारों के
भोले-भाले
गांव के।

रंग नहीं हों
कोमल मन पर
दहशत भरे
प्रभाव के,
रंग रंगें हम
अपनेपन के
त्याग-समर्पण
भाव के।

—77, तिलकपथ, महिदपुर (उज्जैन)-456443



होली में बोली बच्चों की टोली

बच्चों का सबसे प्यारा त्योहार है होली! शायद इसीलिए होली के आने का इंतजार उन्हें सबसे ज्यादा रहता है। कई दिन पहले से ही होली खेलने की तैयारी में वे जुट जाते हैं और अपने दोस्तों को रंगने की नई-नई तरकीबें सोचने लगते हैं। होली की तरंग में झूमते बच्चों से बातें करके हमने जानना चाहा कि होली के बारे में वे क्या सोचते हैं, क्या जानते हैं और कैसे मनाते हैं अपने इस रंगीले त्योहार को। तो आइए, होली के बारे में बच्चों की बातें उनसे ही सुनें।

प्राकृतिक रंगों का प्रयोग करें

—मृणाल त्रिपाठी



होली! मेरा प्रिय त्योहार। क्योंकि इसमें रंग होते हैं, बहुत सारे रंग। इस त्योहार का अर्थ घातक रंगों का इस्तेमाल नहीं है, बल्कि इसका वास्तविक भाव बहुत गहरा है। इससे प्रेम, मित्रता, भक्ति, खुशी और कई अन्य भावनाएं जुड़ी हुई हैं। इस दिन मैं अपनी सभी चिंताएं भूल जाती हूं और अपने जीवन को खुशियों के सभी रंगों से भरा पाती हूं। मैं एक ऐसे मोहल्ले में रहती हूं जहां सभी सम्प्रदाय के लोग रहते हैं। अत: मुझे कभी ऐसा महसूस नहीं होता कि पूर्वी भारत की होने के कारण मैं दक्षिण भारतीय त्योहारों में शामिल नहीं हो पा रही हूं। यहां सभी मिलकर होली मनाते हैं। सभी अपने बैर भूलकर झूमते हैं और होली का आनंद उठाते हैं। हम सभी बच्चे टोलियों में बंटकर एक दूसरे पर रंग डालते हैं और अगर दूसरी टोली किसी को अकेला पा जाती है तो उस बच्चे पर गुब्बारे और पिचकारियों से जमकर रंग डाला जाता है। यह सब देखकर मुझे बहुत खुशी होती है। मुझे लगता है कि अगर सभी होली का असली अर्थ समझकर सच्ची प्रेम-भावना से यह त्योहार मनाएं और प्राकृतिक रंगों का प्रयोग करें तो मेरी यह खुशी कई गुना बढ़ जाएगी।

गांव की होली देखने की तमन्ना

—शिवांक



होली रंगों और उमंगों का त्योहार है। लाल, हरा, नीला, पीला और बैंगनी मेरे मनपसंद रंग हैं। इन रंगों से खेलने में मुझे बड़ा मजा आता है, खासकर उस समय जब मैं अपनी मनपसंद पिचकारी से दूसरों को रंगता हूं। ... कभी-कभी मेरा मन करता है कि मैं गांव में अपनी नानी के साथ होली मनाऊं। लेकिन जब भी ऐसा सोचता हूं कुछ-न-कुछ जरूर हो जाता है और मैं जा नहीं पाता हूं। इस बार हमारी परीक्षाएं होली से कई दिन पहले खत्म हो जाएंगी इसलिए शायद गांव चला ही जाऊं। मेरा गांव अयोध्या के पास पड़ता है। मेरे मन में गांव की होली देखने की बहुत तमन्ना है।

हमारी सोसायटी में तो होली बच्चों, आंटियों और दादियों की होती है। ज्यादातर अंकल लोग तो घरों में ही दुबके रहते हैं। बच्चों की टोली तो सुबह से ही रंगीन हमला शुरू कर देती है और हमारी आंटियां, खासकर मेरी मम्मी की सहेलियां तो एक-दूसरे के घर जा-जाकर, पकड़-पकड़कर रंगती हैं। फिर दादियां, आंटियां सब सोसायटी के पार्क में आकर जुटती हैं, ढोल-मजीरा बजाती हैं, गीत गाती हैं और अबीर-गुलाल उड़ाती हैं। हम सब मिल-जुलकर गुझिया, नमकीन, पकौड़े, दहीभल्ले खाते हैं और फोटो भी खिंचाते हैं। इस दिन हम सबसे प्रेम के साथ बोलने और खेलने का वादा करते हैं। होली हमारी जिन्दगी में रंग भरी खुशियां ले आती है इसलिए मैं तो हर साल होली के आने का इन्तजार करता हूं।

याद आती है इलाहाबाद की होली

—कुमार हर्ष



होली मनाने का मजा तो हमें अपने शहर इलाहाबाद में ही आता था। होली के लिए बड़े भइया सूखे पेड़-पत्तियां लाकर होलिका बनाते थे और कहते थे कि होलिका जलाने से बुराइयां जलती हैं। वहां हमारे खूब सारे दोस्त थे। हम उन्हें खूब रंगते थे। भागते-दौड़ते थे—छुप-छुप के लोगों को रंग डालते थे। और सबके घर जाकर अच्छी-अच्छी चीजें खाते थे। मम्मी भी खूब पकवान बनाती थीं। मुझे गुझिया खूब पसंद है। यहां तो सारे लोग अपने-अपने घरों में छुपे रहते हैं। रंग खेलने से डरते हैं। होली तो खूब मस्ती करने, धमाल करने का त्योहार है। मगर ढेर सारे दोस्त होने चाहिए तभी होली का असली मजा है।

हमें इस बार सुनामी से परेशान लोगों को भी याद रखना चाहिए और उन्हें भी अपने साथ बुलाना चाहिए जिससे वो भी थोड़ी देर के लिए अपना दुख भूल सकें।

प्रेम और सौहार्द का त्योहार

—आरिफ़ अहमद खान



होली एक ऐसा त्योहार है जिसे सभी भारतवासी प्रेम और सौहार्द के साथ मनाते हैं। जिस तरह से हमारे घर में ईद-उल-फितर, ईद-उल-जुहा हर्ष और उल्लास के साथ मनाई जाती है बिल्कुल उसी तरह होली भी हमारे यहां मनाई जाती है। ईद के दिन मां मीठा पकवान बनाती हैं और पड़ोसी आंटियों के यहां भिजवा देती हैं। दिन भर लोगों का तांता लगा रहता है। मम्मी-पापा लोगों को न सिर्फ मुबारकबाद देते हैं बल्कि सबका मुंह भी मीठा कराते हैं। होली मुझे और भी अच्छी लगती है क्योंकि इस दिन दोस्तों की टोलियों के साथ सभी को अबीर-गुलाल लगाता हूं। और मुझे वैसे भी गुलाल बहुत पसंद है।

दोपहर बाद जब हम स्नान करते हैं तब हमारे घर में पड़ोसियों के घरों से पकवान इतनी मात्रा में आ जाते हैं कि जी भर खाने के बाद भी खत्म नहीं होते। और मजा तब आता है जब मम्मी-पापा शाम को अपने दोस्तों के यहां ले जाते हैं और होली की मुबारकबाद देते हैं। मुझे यह सोचकर अच्छा लगता है कि मैं ऐसे देश में पैदा हुआ जहां अनेक जाति के लोग रहते हैं और पूरे साल सभी धर्मों के त्योहार भाईचारे के साथ मनाए जाते हैं।

बिहार में होली का अनोखा ढंग

—इति माधवी



हमारे बिहार में होली मनाने का ढंग बहुत ही अनोखा तथा विचित्र है। लोग बसंत पंचमी से ही इसकी शुरुआत कर देते हैं। गुलाल से वे होली के आगमन का परिचय देते हैं। होली के दो दिन पहले 'होलिका दहन' मनाई जाती है जिसे हम अपनी भाषा में 'अगजा' कहते हैं। इस दिन लकड़ियों आदि को इकट्ठा कर जलाया जाता है और उसकी पूजा की जाती है। यह पूजा शाम को होती है तथा दोपहर से ही हमारे घरों में भांति-भांति के पकौड़े, दही बड़े आदि बनते हैं। अगले दिन सुबह लोग अपने-अपने घरों से रंगों से भरी पिचकारी लेकर निकलते हैं और एक-दूसरे को रंगों में पूरी तरह भिगो देते हैं। हमारे घरों में पूड़ी, कचौरी, खीर आदि बनती है। रंगों से पूरी तरह भीगने के बाद हम नहाकर स्वच्छ कपड़े पहनते हैं, पर हमारी होली अभी समाप्त नहीं होती। हम बड़ों के पैर पर गुलाल रखकर उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं, फिर हमारी होली गुलाल से शुरू होती है। शाम होने से पहले मेहमानों का आना शुरू हो जाता है। हम भी अपने दोस्तों के घर जाते हैं। एक-दूसरे को गुलाल लगाते हैं और मिलते-जुलते हैं। इस तरह होली का यह मजेदार त्यौहार रात के नौ-दस बजे तक खत्म होता है।

एक दुखद घटना कभी नहीं भूलती

—मोहित बंसल

होली रंग, गुलाल और मस्ती से भरा त्योहार है। मुझे होली खेलना हमेशा अच्छा लगता रहा है। होली के दिन मैं और मेरा भाई मिलकर अपने दोस्तों, मम्मी-पापा और रिश्तेदारों को खूब रंग, गुलाल लगाते हैं। मम्मी को डर होता है कि परीक्षाएं सिर पर हैं, कहीं ठंड न लग जाए इसलिए पानी में अधिक न भीगने का निर्देश होता है लेकिन होली का दिन हो और हम सब रंग में न डूबें ऐसा कैसे हो सकता है? बस थोड़ा-सा मम्मी को मनाया और हम पिचकारी उठाकर घर से बाहर। इस दिन कोई भी रंग लगाने को बुरा नहीं मानता। हम सब बच्चे भूत बने होते हैं और ऐसे में नीले-पीले हाथों से गुझियां खाने का मजा ही कुछ और होता है।



मुझे एक दुखद घटना कभी नहीं भूलती। लगभग चार साल पहले, कुछ लड़कों ने मेरे दोस्त के मुंह पर रंग लगाया जो उसकी आंखों में चला गया। उसे तत्काल अस्पताल ले जाना पड़ा। आज भी मेरा वह दोस्त बिना चश्मे के ठीक से देख नहीं पाता। इसलिए इस दिन गंदे और रासायनिक रंगों का प्रयोग बंद होना चाहिए। बच्चों को एक दूसरे पर गुब्बारे भी नहीं मारने चाहिए। बड़ों को भी चाहिए कि वे इस दिन शराब पीकर इस त्योहार की पवित्रता को नष्ट न करें क्योंकि त्योहार हमारी गौरवशाली संस्कृति का प्रतीक हैं।

कीचड़ और कालिख से न खेलें

—हेमन्त कुमार



हमारे कटिहार जिले के गांवों में होली के दिन लोग एक-दूसरे पर कीचड़, रंग, कालिख आदि फेंककर सुबह से दोपहर तक होली खेलते हैं। कुछ लोग शराब पीकर हो-हल्ला करते हैं। वे एक-दूसरे पर कीचड़ उछालकर गालियां बकते हैं, जो अशोभनीय लगता है। हम बच्चे चाहते हैं कि हमारा

समाज इस प्रकार के कार्यों से अछूता रहे। हम चाहते हैं कि होली जैसे उत्सव में कीचड़ मिट्टी का चलन बंद हो। गुलाबी, बसंती रंग तथा गुलाब जल आदि प्रयोग में लाए जाएं ताकि होली उत्सव में हमारी संस्कृति की पहचान बनी रहे।

अवध की होली में गाते हैं फगुआ

—पारुल चौधरी



हमारे अवध क्षेत्र में होली खूब खेली जाती है। होली से एक दिन पहले रात में होलिका जलाई जाती है। जलाने से पहले सब लोग परिक्रमा करके पूजा करते हैं। होलिका में जौ की बाली भूनते हैं। अगले दिन सुबह से ही घर में गुझिया, मीठी पूड़ी, गुलगुले, समोसे, नमकीन, पकौड़े आदि बनने शुरू हो जाते हैं। हम बच्चे तो सुबह से होली खेलना शुरू कर देते हैं। मगर बड़े लोग दोपहर से रात तक होली खेलते हैं, टोली में ढोल-मजीरा बजा-बजाकर जोगीड़ा और फगुआ गाते हैं। किन्हीं-किन्हीं के यहां भांग की पकौड़ी बनती है और ठंडाई भी पिलाई जाती है।

हमारे गांव में सबसे अच्छी बात ये है कि कोई कीचड़-मिट्टी नहीं डालता। सभी लोग सबके घर जाकर रंग लगाते हैं। कुछ लोग रंग नहीं लगवाना चाहते हैं तो मैं उनके बालों में चुपके से सूखा रंग डाल देती हूं। उस समय वे सोचते हैं कि बच गए मगर जब नहाते हैं तो उनके सिर से रंग ही रंग गिरता है

पर्व के बीच परीक्षाएं न आएं

—के. शाश्वत

मुझे होली बहुत पसंद है। खासतौर से हरे, नीले, पीले रंग में रंगना। पिचकारियों से पानी छोड़ना या किसी पर गुब्बारे फेंकना। बहुत मजा आता है, परन्तु यह मजा थोड़ा फीका इसलिए रह जाता है क्योंकि उस समय हमारी परीक्षाएं चल रही होती हैं। परीक्षा की वजह से अधिक देर तक पानी में भीगना नहीं मिलता। मैं चाहता हूं कि किसी भी पर्व के बीच में परीक्षाएं न आएं। यह मेरी हार्दिक इच्छा है। थोड़ी-सी शिकायत यह है कि रंगों में कई तरह के हानिकारक कैमिकल्स होते हैं जो हमारी त्वचा को खराब कर देते हैं। मैं चाहता हूं इन पर रोक लगे। यह काम सरकार के साथ-साथ हमें भी करना होगा। तभी हम मन से होली के रंगों का असली आनन्द ले पाएंगे।



होली त्योहार है रंगों का

—मनु शिवम् गौड़



होली त्योहार है रंगों का, यह आगमन है उमंगों का। इस दिन सभी करते हैं मौज-मस्ती, हो शहर या फिर हो बस्ती। सभी मानते हैं इसे एक साथ, खोल देते हैं अपने मन के सभी राज। भूल जाते हैं सभी बैर, गले लगाते हैं सबको, क्या अपने क्या गैर। मेरा मन करता है मैं भी सबको गले लगाऊं, सबके साथ मिलकर इस त्योहार को मनाऊं। पर मैं दखता हूं, कुछ लोग करते हैं सबको तंग, लगाकर उन्हें कीचड़ और पक्के रंग। मैं चाहता हूं उन्हें समझाऊं, उनको यह बताऊं—**मत लगाओ पक्के रंग। लगाओ सिर्फ गुलाल, करो सबसे प्यार, इसी तरह मनाओ यह त्योहार!**

—प्रस्तुति: शिप्रा सिंह
ए-13, जनयुग अपार्टमेंट्स,
वसुधरा एन्कलेव, दिल्ली-110096

दो अनोखे भाई—ग्रिम बंधु

परी कथाएं सुनकर कल्पना के पंखों पर उड़ना हर बच्चे को अच्छा लगता है। परी कथाओं का जिक्र होते ही दो जर्मन भाइयों के नाम सामने आते हैं। बड़ा भाई जेकब लुडविग कार्ल ग्रिम और छोटा विल्हैम कार्ल ग्रिम। दोनों को दुनिया के बच्चे ग्रिम ब्रदर्स या ग्रिम बंधु के नाम से जानते हैं। जेकब ग्रिम का जन्म हुआ था 4 जनवरी, 1785 को और छोटा विल्हैम ग्रिम 24 फरवरी, 1786 के दिन इस दुनिया में आया था। इस बड़े परिवार में आठ लड़के और एक लड़की थी। उनके पिता फिलिप ग्रिम एक वकील थे और मां का नाम था डोरोथी जिमर।

1796 में फिलिप ग्रिम की मृत्यु के बाद परिवार की आर्थिक स्थिति एकदम बिगड़ गई। जेकब और विल्हैम अपने पिता की तरह वकील बनना चाहते थे। लेकिन पढ़ाई के साथ-साथ उन्हें घर चलाने में मां की मदद भी करनी थी। दूसरे बच्चों की तरह इन दोनों ने भी अपनी मां से बचपन में कहानियां सुनी थीं। जर्मनी में प्रचलित भाषाओं और बोलियों पर काम करते हुए दोनों भाई दूर-दूर के क्षेत्रों में घूमे और इसी दौरान उन्हें अनेक लोगों से प्रचलित लोक कथाएं सुनने का अवसर मिला। जेकब और विल्हैम लोगों से कहानियां सुनते और लिख लेते। इस तरह इनके पास बहुत सी लोक कथाएं जमा हो गईं।

लेखक परिचय

सन 1812 में ग्रिम भाइयों ने संकलित लोक कथाओं की पहली पुस्तक प्रकाशित करवाई। पुस्तक में 86 कथाएं दी गई थीं। इसके दो वर्ष बाद दूसरी पुस्तक प्रकाशित हुई। इसमें पुरानी कथाओं के साथ 70 नई लोक व परी कथाएं संकलित थीं। तब से जेकब और विल्हैम ग्रिम कहानियां कहने वाले ग्रिम भाइयों के रूप में मशहूर हो गए।

लोक कथाएं जुटाने के शौक ने उन्हें लेखक बना दिया। 1819 में जेकब द्वारा लिखी गई जर्मन व्याकरण की पुस्तक छपी और आगे चलकर 1854 में जर्मन शब्द कोश का प्रथम खंड प्रकाशित हुआ। यह काम बहुत बाद में 1954 में अन्य विद्वानों द्वारा सम्पूर्ण किया गया। पर आज दुनिया ग्रिम बंधुओं को उनकी लोक कथाओं के लिए अधिक जानती है। ग्रिम बंधुओं की मृत्यु हुए लगभग डेढ़ शताब्दी बीत चली है, फिर भी अपनी लोक कथाओं के लिए दोनों भाई आज भी पूरी दुनिया के बच्चों के बीच खूब लोकप्रिय हैं।

चलो कहानी ढूंढ़ लाएं

एक था सैनिक। कभी उसकी वीरता की चर्चा दूर-दूर तक होती थी। अनेक युद्धों में सैनिक की तलवार ने दुश्मनों का खूब संहार किया था। लेकिन यह सब तो पुरानी बातें थीं। जवानी में जिन घावों पर उसे गर्व होता था, वही बुढ़ापे में पीड़ा देते थे। अब वह बूढ़ा और बीमार था।

उसका एक बेटा था हेंस। वह भी अपने पिता की तरह सैनिक बनना चाहता था। एक दिन पिता ने कहा भी था, "अभी तू छोटा है। कुछ साल बाद मैं तुझे राजा के पास ले चलूंगा। वह तुझे सेना में भर्ती कर लेंगे।"

एक दिन हेंस का दोस्त उससे मिलने आया। वह राजधानी जा रहा था। हेंस ने भी पिता से उसके साथ जाने की आज्ञा ले ली। फिर न जाने क्यों हेंस का मित्र यात्रा पर नहीं गया। पर हेंस यात्रा पर जाने का मन बना चुका था। इसलिए वह अकेला ही घूमने चल दिया। चलते समय मां ने खाने की पोटली थमाते हुए कहा, "बेटा, जब भोजन करने बैठो तो आसपास देख लेना। शायद कोई भूखा बैठा हो।"

हेंस को मां की बात याद रही। वह घर से कुछ दूर निकल आया। दोपहर हुई तो एक झरने के पास रुक गया। आसपास घना जंगल था। कहीं कोई नहीं था। उसने खाने की पोटली खोली, इधर-उधर देखा, फिर जोर से बोला, "अगर किसी को भूख लगी हो तो उसका स्वागत है।"

तभी वहां एक बूढ़ा आ गया— देखने से ही लग रहा था कि जैसे वह कई दिन से भूखा हो। उसे देख हेंस ने कहा, "बाबा, आइए, भोजन कीजिए।"

बूढ़ा बैठकर गपागप खाने लगा। बीच में उसने कहा, "अगर तुम मुझे खाना न देते तो मैं तुम्हें दो बातें बताता, पर क्योंकि तुमने मुझे भोजन दिया है, इसलिए अब एक ही बात बताऊंगा।" सुनकर हेंस हैरान रह गया। उसने कहा, "बाबा, मैंने किसी लालच में आपसे खाने के लिए नहीं पूछा था, मेरी मां ने कहा कि जब भी भोजन करने बैठो तो आसपास देख लेना कि कहीं कोई भूखा तो नहीं बैठा है।"

भोजन के बाद बूढ़े ने कहा, अब मेरी तीसरी बात सुनो, "तीसरी बात यह है कि पहली दोनों बातें झूठ हैं। अपनी राह जाओ। ईश्वर तुम्हारा भला करें।"

सुनकर हेंस उलझन में पड़ गया। वह सोच रहा था, 'वे पहली दो बातें क्या हैं जो झूठ हैं?' उसने पूछा, "बाबा, लेकिन वे दो बातें क्या हैं?"

बूढ़े ने कहा, "यहां बैठकर दो युवकों ने कुछ देर पहले भोजन किया था। मेरे मांगने पर भी उन्होंने मुझे भोजन नहीं दिया था। मैंने उन दोनों से कहा था—आगे तीन रास्ते हैं; बाईं तरफ जाओ, वहां एक चट्टान है। उसे हटाने पर सोने के सिक्के मिलते हैं। दाईं तरफ एक जंगल है। वहां पेड़ों पर अनेक पक्षी बैठे रहते हैं। उन पर तीर चलाओ। जितने पक्षी मारोगे, उतने ही सोने के सिक्के मिलेंगे।"

"फिर क्या हुआ?" हेंस ने पूछा।

"हुआ ये कि उनमें से एक युवक बाईं ओर चला गया और दूसरा दाईं तरफ। लेकिन तुम न बाएं जाना, न दाएं मार्ग पर बढ़ना। तुम तो सीधे मार्ग पर आगे जाओ।" कहकर बूढ़ा हंस पड़ा।

"मैं उन युवकों की तरह क्यों दाएं-बाएं न जाऊं?" हेंस ने जानना चाहा।

"क्योंकि बाईं ओर जाने पर बुरा होता है। चट्टान हटाने पर जहरीले बिच्छू निकलते हैं। उनके काटने से आदमी बेहोश हो जाता है। सोने के सिक्के मिलने वाली बात झूठ है। इसी तरह दाईं ओर के जंगल में तीर चलाने वाले को राजा के सैनिक गिरफ्तार कर लेते हैं। वह जंगल राजा का है। वहां शिकार करना मना है।" बूढ़े ने दो पल रुक कर फिर कहा, "इसीलिए तुमसे कहता हूं कि दाएं-बाएं नहीं, बल्कि बिल्कुल सीधे जाना।"



हेंस को बूढ़े पर क्रोध आ गया लेकिन बूढ़ा तो न जाने कहां चला गया था। हेंस घोड़े पर बैठकर चल दिया। आगे तिराहा था। उसने घोड़े को बाईं तरफ मोड़ दिया। देखा दूर एक आदमी एक बड़ी चट्टान को खिसका रहा था, फिर उसकी चीख सुनाई दी। हेंस ने बढ़कर उसे पीछे खींच लिया। सामने अनेक काले बिच्छू रेंग रहे थे। हेंस उसे किसी तरह पीछे ले आया। उस युवक का घोड़ा पीछे बंधा था। हेंस ने कहा, ''जल्दी से भागो, नहीं तो बिच्छू काट लेंगे।''



वह युवक बोला, ''लेकिन उस बूढ़े ने तो कुछ और ही कहा था। वह शैतान कहीं मिल जाए तो मजा चखा दूं।''

हेंस बोला, ''एक-एक पल कीमती है। हमें एक अन्य आदमी को राजा के सैनिकों से बचाना है।'' और फिर दोनों तिराहे पर लौटे और वहां से दाईं तरफ बढ़ चले। कुछ दूरी पर उन्होंने राज सैनिकों को देखा। वे एक युवक को बांधकर पीट रहे थे। हेंस ने उन्हें रोका। कहा, ''क्यों मार रहे हो इसे?''

एक सैनिक बोला, ''इसने राजा के पक्षियों पर तीर चलाया है। इसे कड़ी सजा मिलेगी।''

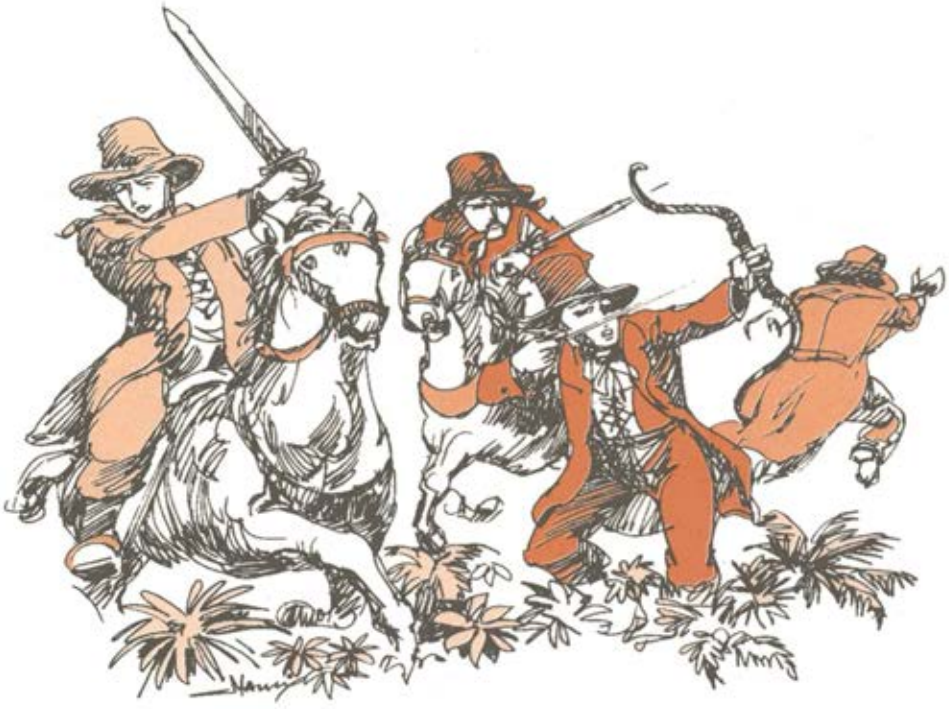
हेंस ने सैनिकों को समझाया। वे पांच थे। हेंस ने उन्हें एक-एक सिक्का दिया और कहा, ''यह सिक्का तुम्हारा इनाम है। इसने गलती से तीर चला दिया था। आगे ऐसी गलती नहीं होगी।'' इस पर सैनिकों ने उस युवक के बंधन खोल दिए और वहां से चले गए।

अपनी जान बचाने के लिए दोनों युवकों ने हेंस को धन्यवाद दिया। वे दोनों ही शैतान बूढ़े से नाराज थे और उसे सजा देना चाहते थे। हेंस ने उनसे पूछा तो पता चला कि वे दोनों सैनिक थे और छुट्टियों में अपने-अपने घर जा रहे थे। तीनों अपने घोड़ों पर बढ़ चले। बातें होने लगीं। पता लगा उन दोनों में एक तीरंदाज था और दूसरा तलवार चलाने में बहुत कुशल।

कुछ दूरी पर एक गांव नजर आया। वहां आग लगी हुई थी। घर जल रहे थे। चीख-पुकार सुनाई दे रही थी। हेंस और उसके साथी तेजी से वहां जा पहुंचे। गांव में कोहराम मचा हुआ था। सड़क पर कई घायल पड़े हुए थे। कुछ लोग जलते हुए घरों से सामान निकाल रहे थे।

ये तीनों भी गांव वालों की सहायता में जुट गए। पता लगा, कुछ देर पहले डाकू आए थे। डाकुओं ने घरों को लूटा और वहां आग लगा दी, फिर कई गांव वालों को घायल करके वहां से चलते बने। गांव के मुखिया ने उन्हें बताया, ''डाकू इस क्षेत्र में उत्पात मचाते हुए घूमते हैं। इस इलाके के दूसरे गांव वाले भी डाकुओं के कारण परेशान हैं।''

हेंस ने कहा, ''हम लोगों के रहते हुए आपका कोई कुछ नहीं



बिगाड़ सकता।'' फिर ये तीनों डाकुओं की खोज में चल दिए। कुछ दूर जाने पर आगे घाटी में दूसरा गांव था। वहां भी धुएं के बादल उठ रहे थे, डाकू लूट-पाट कर रहे थे।

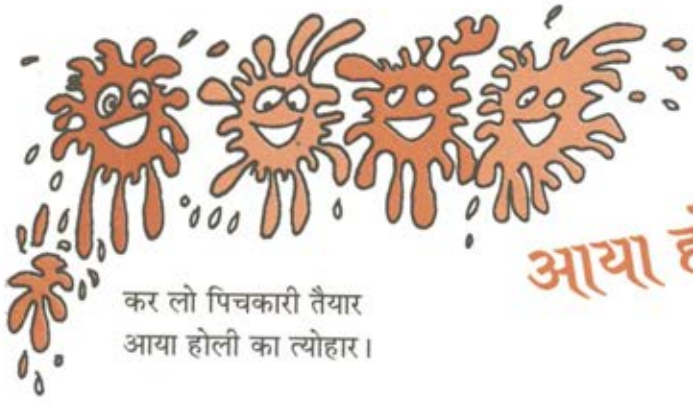
हेंस ने जल्दी-जल्दी अपने साथियों से बात की फिर तीनों गांव के तीन तरफ तैयार होकर खड़े हो गए। कुछ देर बाद डाकुओं की टोली लूट का माल लेकर घोड़ों पर आती दिखाई दी। अचानक उन पर तीरों की वर्षा होने लगी। हेंस और उसके दोनों साथी डाकुओं पर तीन तरफ से तीर चला रहे थे। डाकू बुरी तरह से घिर गए थे। वे घबराकर इधर-उधर भागने लगे, लेकिन बच न सके। थोड़ी ही देर में सारे डाकू मारे गए।

अब हेंस और दोनों साथी गांव में गए। गांव वालों के साथ मिलकर मृत डाकुओं के पास आए। गांव वालों को उनका लूटा सामान वापस मिल गया। इन तीनों ने मिलकर घायल गांव वालों की मरहम पट्टी की। हेंस ने गांव वालों से कहा, ''अब कोई डर नहीं। डाकुओं का आतंक समाप्त हुआ। आप लोग निश्चिंत रहें। मैं और मेरे साथी समय-समय पर यहां आते रहेंगे।''

गांव वालों ने इन तीन साहसी वीरों को बहुत धन्यवाद दिया। गांव वाले चाहते थे कि ये तीनों वीर अभी कुछ दिन गांव में उन सबके साथ ही रहें। पर अब हेंस को मां की याद आ रही थी। उसके दोनों साथी भी अपने-अपने घर जाना चाहते थे।

इन लोगों ने गांव वालों से विदा ली और बढ़ चले। वे दोनों युवक हेंस को अपने-अपने घर ले जाना चाहते थे। आखिर उसी ने तो उन दोनों को गहरे संकट से बचाया था। हेंस ने कहा, ''अब तो हम तीनों मित्र बन गए हैं। आगे भी मिलेंगे और साथ-साथ यात्राएं करेंगे, क्योंकि डाकू और लुटेरे अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुए हैं।'' फिर उसने दोनों से विदा ली। चलते समय उसने उन दोनों को समझाया, ''हां, उस बूढ़े की खोज में मत जाना।'' और तीनों हंस पड़े। हेंस तेजी से दौड़ने लगा। उसे अपनी मां याद आ रही थी। ❑

—प्रस्तुति : देवेन्द्र कुमार,
रमेश तैलंग



आया होली का त्योहार

—यशवंत गर्ग

कर लो पिचकारी तैयार
आया होली का त्योहार।

रंग घुला है हौजी-हौजी
जल्दी आओ भैया-भौजी।
चाचा आओ, चाची आओ
आओ जी तुम छोटी भौजी।

गुझिया और चाट ले आओ
जो भी हो बिल्कुल तैयार।

ढोलक, ढोल सभी ले आओ
घर से निकल पार्क में आओ।
कहां छिपे हैं छोटे भैय्या
उनका जल्दी पता लगाओ।

सबकी आज रगों में कर दो
हंसी-खुशी का नव-संचार।

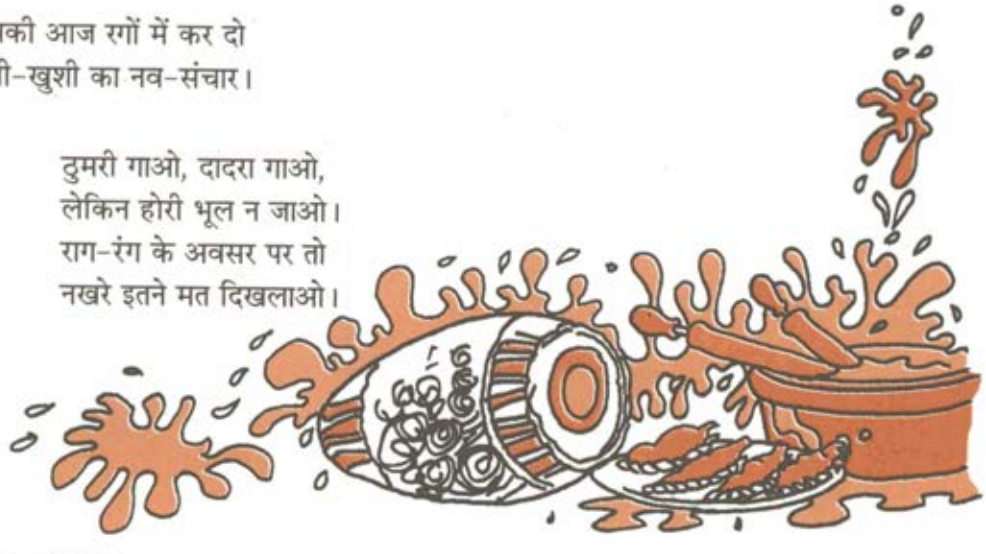
ठुमरी गाओ, दादरा गाओ,
लेकिन होरी भूल न जाओ।
राग-रंग के अवसर पर तो
नखरे इतने मत दिखलाओ।

वरना तुमको लोग कहेंगे
यह तो नहीं किसी का यार।

भरकर पिचकारी ले आओ
जो बचता हो उस पर डालो
सबको कर दो रंग-बिरंगा
रंग-अबीर मिलाकर डालो।

आज मिला मौका मत चूको
आज बांट दो ढेरों प्यार।

—ई-106, शास्त्री नगर, मेरठ-250004



काश, ऐसा दिन आता...

—मोहम्मद अरशद खान

होली का दिन नजदीक आता जा रहा था। मुहल्ले के बच्चों में काफी उत्साह था। अब्दुल, मंजीत और डेविड सभी रोज़ शाम को नीरज के दादाजी के पास जा पहुंचते और होली के बारे में ढेर सारी बातें करते। दादाजी भी रस ले-लेकर उनकी बातें सुनते।

नीरज ने पहले से ही रंग और पिचकारियां खरीद ली थीं और नए कपड़े सिलने को दे दिए थे। अब्दुल, डेविड और मंजीत ने भी होली मनाने की तैयारियां पूरी कर ली थीं।

आजकल रोज शाम को जब चारों दादाजी के पास इकट्ठे होते तो बताते कि उन्होंने होली की क्या-क्या तैयारियां कर रखी हैं। दादाजी को भी उन चारों की बातें सुनकर खूब आनंद आता।

आज होलिका-दहन का दिन था। चारों सुबह से ही होलिका-दहन की सामग्री इकट्ठा करने के लिए लोगों की मंडली के साथ घूम रहे थे।

शाम होते ही चारों दादाजी के पास जा पहुंचे और होलिका-दहन पर चलने की जिद करने लगे। दादाजी तैयार हो गए। कंधे पर शाल डालकर और हाथ में छड़ी लेकर वह बच्चों के साथ चल दिए।

कुछ ही देर में सभी वहां जा पहुंचे। चौराहे के बीचों-बीच जलाने के लिए मोटी-मोटी लकड़ियां रखी गई थीं। जब उनमें आग लगाई गई तो खूब ऊंची-ऊंची लपटें उठने लगीं। यह देख सारे बच्चे खुश होकर तालियां बजाने लगे।

वहां से लौटते समय रास्ते में दादाजी ने भक्त प्रह्लाद और उसके अत्याचारी पिता हिरण्यकश्यप की कथा सुनाई। सबने ध्यान से कथा सुनी और प्रसन्न हुए।



सुबह होली थी। रात में ही सभी ने रंग घोलकर रख लिया था और अपनी पिचकारियां भी अच्छी तरह जांच ली थीं, ताकि समय पर धोखा न दे जाएं। खा-पीकर सब जल्दी ही सो गए, ताकि सुबह जल्दी उठ सकें।

सुबह होते ही पिचकारियों में रंग भरकर सभी निकल लिए। सुबह तक पानी में घुला रंग बर्फ-सा ठंडा हो गया था। ठंडा पानी जब शरीर पर पड़ता तो सारा शरीर सिहर उठता। लेकिन बच्चों के उत्साह और उमंग के आगे यह कुछ भी नहीं था। वे इधर से उधर उछलते-कूदते एक-दूसरे पर दनादन पिचकारियां चलाए जा रहे थे।

जगह-जगह पर मंडलियां बनाकर लोग फाग गा रहे थे। ढोलक की थाप और झांझ-मंजीरों की झनकार में बड़े-बूढ़े भी झूम रहे थे।

नीरज, अब्दुल, मंजीत और डेविड भी लोगों के दल के साथ घूम रहे थे। उनकी खुशी का ठिकाना न था।

जी भर रंग खेलने के बाद चारों दादाजी के पास पहुंचे। उनके रंग-बिरंगे चेहरों से उल्लास टपक रहा था।

दादाजी उन्हें देखते ही बोले, "आओ, आओ, तुम सब होली खेल आए? खूब मजा लिया, क्यों डेविड?"

"जी, दादाजी, लेकिन मैं डेविड नहीं अब्दुल हूं।" अब्दुल मुस्कराया



तो रंग-बिरंगे चेहरे पर सफेद दांत चमक उठे।

"अरे....," दादाजी ने ठिठोली की, "मंजीत तो बिल्कुल लंगूर लग रहा है।"

"लेकिन, दादाजी, मैं मंजीत नहीं, नीरज हूं," नीरज बोला।

"तो तुम सबने चेहरों पर इतना रंग पोत रखा है कि मुझे पहचानने में भी भूल हो गई," दादाजी ठठाकर हंस पड़े। पर अगले ही पल वह गंभीर हो गए और कहने लगे, "काश! ऐसा प्रेम का रंग हर भारतवासी के चेहरे पर चढ़ जाता, जिसमें उसका धर्म, जाति, संप्रदाय सब कुछ रंग जाता। उसकी पहचान सिर्फ मानव के रूप में होती। काश, ऐसा दिन आता..."

"ऐसा दिन जरूर आएगा, दादाजी," सभी एक स्वर में बोल उठे।

दादाजी ने भाव-विह्वल होकर सबको अपनी बाहों के घेरे में समेट लिया। ❑

—11/37, मंगल बाजार, रुदौली
फैजाबाद-225411 (उ.प्र.)

वेदों में विद्या का महत्व

—अखिलेश झा

विश्व में भारत की पहचान और प्रतिष्ठा सबसे अधिक ज्ञान के क्षेत्र में उसके विकास और उसकी उपलब्धियों के कारण है। हमारी यह पहचान हजारों वर्षों से है और वेद इस पहचान के सबसे पुराने उदाहरण हैं। वैदिक ऋषियों ने अपने अनुभव से और अपनी दूरदृष्टि से यह जान लिया था कि विद्या ही जीवन में सबसे महत्वपूर्ण है और यही मनुष्य को समाज में वास्तविक प्रतिष्ठा देती है। यही कारण है कि वेदों में शिक्षा के महत्व पर बहुत बल दिया गया है।

विद्या के महत्व का कारण है कि यह मनुष्य को सब कुछ देती है। मनुष्य के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण तत्व हैं— चरित्र, स्वास्थ्य, अन्न-धन और बल। ऋग्वेद के आरंभ में ही कहा गया है कि विद्या शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक सब तरह की पवित्रता देनेवाली है—ये चरित्र के ही अंग हैं। उसी मंत्र में आगे कहा गया है कि विद्या अन्न देती है और सब तरह के बल भी। सभी तरह के कर्म भी तभी सफल होते हैं, जब विद्या से प्रेरित बुद्धि का प्रयोग उन कर्मों में होता है। इसी वेद में अन्यत्र कहा गया है कि सुख की प्राप्ति ज्ञान से ही होती है।



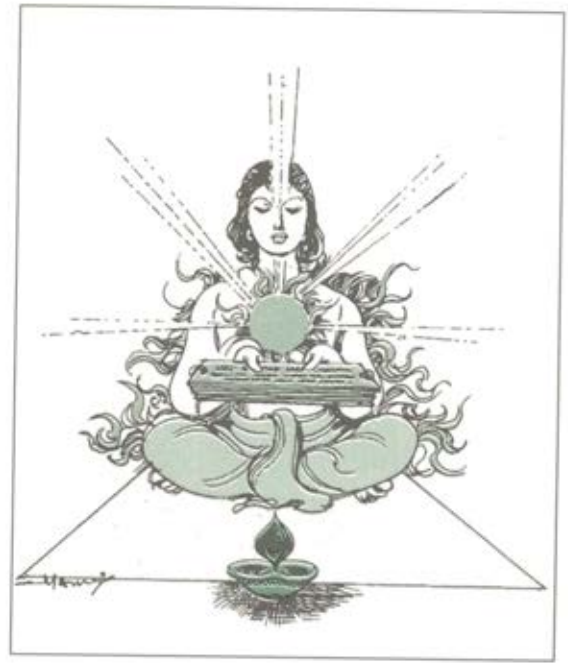
वास्तव में विद्या ही सबसे अनमोल धन है—यह न तो हमें विरासत में मिलता है, न बाजार में बिकता है, न इस पर राजा या सरकार का हक होता है और न ही इसे कोई छीन या चुरा सकता है। मनुष्य अपने प्रयास से जो सबसे आसानी से प्राप्त कर सकता है, वह है ज्ञान। पर, ज्ञान की प्राप्ति जितना आसान है, उतना ही कठिन भी। ऋग्वेद में कहा गया है कि मनुष्य सब तरह से समर्पित होकर गुरु के पास ज्ञान अर्जित करने के लिए जाए। ज्ञान प्राप्त करने का वैसे तो हर समय ही अनुकूल होता है, पर वेदों का निर्देश है कि उषाकाल में विद्या अर्जित करने के लिए जाना चाहिए, इसीलिए इसे ब्रह्ममुहूर्त भी कहते हैं। इसी कारण से उषाकाल को वेद में बहुत महत्व दिया गया है और उषा वैदिक काल की एक महत्वपूर्ण देवी भी मानी गई हैं।

बच्चो, कभी तुमने यह सोचा है कि विद्या अथवा ज्ञान पर इतना बल क्यों दिया गया है? क्या अंतर है ज्ञानी और अज्ञानी में। ज्ञानी हमेशा सही रास्ते पर चलता है और अज्ञानी को सही-गलत रास्ते का पता नहीं रहता। इसलिए, ज्ञानी व्यक्ति शायद ही कोई गलत काम करता है, उसका लक्ष्य उसे अवश्य प्राप्त होता है। ज्ञान सिर्फ पाठशाला में जाकर या गुरु का सान्निध्य पाकर ही नहीं अर्जित किया जाता, ज्ञान बिना अक्षर-ज्ञान के और बिना पाठशाला गए भी ज्ञानियों के रास्ते का अनुसरण कर तथा

ज्ञानियों की संगति करने से प्राप्त हो जाता है। सभी पढ़े-लिखे लोग ज्ञानी नहीं होते। ज्ञानी वही होते हैं जो सन्मार्ग पर चलते हैं और अच्छा आचरण करते हैं। ऋग्वेद में बताया गया है कि सही रास्ता क्या है और उत्तम कर्म क्या हैं?

हरेक सभ्यता में ज्ञान का कोई-न-कोई देवी या देवता अवश्य होता है। भारत में सरस्वती को विद्या की देवी माना गया है। वेदों में ही पहली बार सरस्वती को विद्या की देवी के रूप में देखा गया। ऋग्वेद में कहा गया है कि सरस्वती हमारी बुद्धि को उत्तम मार्ग में प्रेरित करती है, वह मनुष्य को सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है और अन्न तथा बल से युक्त करती है। वेदों में सरस्वती के साथ-साथ दो और देवियों का उल्लेख बार-बार मिलता है—इला और मही। ऋग्वेद में कहा गया है कि *इला, मही* और *सरस्वती*—ये तीन देवियां सुख देनेवाली हैं और इनका क्षय नहीं होना चाहिए, यज्ञ के द्वारा अर्थात् विशेष प्रयास के द्वारा इनकी रक्षा होनी चाहिए। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् सातवलेकरजी ने *इला* को मातृभूमि, *मही* को मातृभाषा और *सरस्वती* को मातृसंस्कृति कहा है। सरस्वती के अलावा अग्नि को भी वेदों में ज्ञान का स्रोत माना गया है। ऋग्वेद में कहा गया है कि अग्नि अज्ञानी को उत्तम बुद्धि देती है और उसे उन्नति की दिशा दिखाती है।

मनुष्य हमेशा अपनी तुलना समाज के दूसरे लोगों से करता है और हमेशा दूसरों से समृद्ध होने, आगे निकलने की कोशिश करता है। ऋग्वेद कहता है कि ज्ञान के द्वारा ही मनुष्य सबमें श्रेष्ठ बन सकता है। अथर्ववेद में कहा गया है कि बुद्धि हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण वस्तु है। इसी वेद में एक और स्थान पर कहा गया है कि ज्ञान मनुष्य की आत्मा है। ज्ञान को आत्मा कहने का अर्थ है, मनुष्य की ऐसी पहचान जिसका समय, स्थान आदि बदलने पर कोई क्षय नहीं होता। इसलिए, यजुर्वेद में विद्वान को संबोधित करते हुए कहा गया है कि वह न तो मरता है और न ही उसका क्षय होता है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण तो वैदिक ऋषि ही हैं। हजारों



वर्षों के बाद भी आज हम उनके द्वारा अर्जित ज्ञान और उनके दिखाए गए मार्ग पर चलने का प्रयास करते हैं। वैदिक ऋषि मानव-सभ्यता के लिए हमेशा सजीव मार्गदर्शक के रूप में बने रहेंगे।

वैदिक काल में ज्ञान का प्रसार कैसे होता था, इसका अनुमान लगाना बहुत कठिन नहीं है। उस काल में गुरुकुल थे और आम तौर पर लोग वहीं जाकर ज्ञान प्राप्त करते थे। श्रुति परंपरा के विषय में हम शुरू के अध्यायों में जान चुके हैं। छात्र शिक्षकों की कही बात ध्यान से सुनकर याद कर लेते थे—ज्ञान बांटने की यह मौखिक परंपरा हजारों वर्षों तक चली। वेद भी हम तक मौखिक परंपरा से हजारों वर्षों के बाद भी बिना विकृति के पहुंचे हैं। उस काल में संभवत: किताब-कॉपी तथा कलम-पेंसिल का प्रयोग नहीं होता था। संस्कृत में एक श्लोक भी है जिसका अर्थ है कि विद्या वही है, जो मस्तिष्क और व्यवहार में है, वह नहीं जो कि किताबों में है। आज भी हमारे शिक्षक ज्ञान की बातें हमें कंठस्थ करने के लिए कहते हैं। वैसे, कंप्यूटर तथा अन्य मशीनों के आ जाने से आज के छात्रों में ज्ञान की

बातें कंठस्थ करने की प्रवृत्ति कम होती जा रही है। परंतु, हम आज भी उसी छात्र की प्रशंसा करते हैं, जिसे ज्ञान की बातें मुहजबानी याद रहती हैं। इसलिए, बच्चो, कंप्यूटर में महारत हासिल करने के साथ-साथ अपनी याददाश्त पर भी पूरा ध्यान देना।

वैदिक काल के राजा भी ज्ञान के प्रचार-प्रसार में पूरी रुचि लेते थे। ऋग्वेद में राजा को निर्देश है कि वह अज्ञानियों को ज्ञानी बनाए। अथर्ववेद में कहा गया है कि राजा की चेष्टा होती थी कि वह विद्वानों का प्रिय बन सके। इसलिए, वैदिक काल में सबसे अधिक प्रतिष्ठा विद्वानों की ही थी। अच्छी और नेक सलाह के लिए हर राजा चाहता था कि विद्वान् लोग उसके सलाहकार बनें। आज भी सरकार में विद्वान् लोगों को विभिन्न विषयों पर सलाह देने के लिए सलाहकार के रूप में रखा जाता है। ये ही देश के लिए योजनाएं बनाते हैं और देश के विकास में योगदान करते हैं। वैदिक काल में भी सभा, समितियों आदि राजनीतिक संस्थाओं में विद्वान् लोग ही जाते थे जो राजा पर नियंत्रण रखते थे और राजा को सलाह देते थे। ऋग्वेद में राजा और समाज के लिए एक महत्वपूर्ण निर्देश है कि वे ज्ञानियों के महान् ज्ञान का प्रचार-प्रसार सर्वत्र करने के लिए प्रयत्न करें।

वैदिक काल में तीन प्रमुख नेता माने जाते थे—सैनिक, शासक और शिक्षक। ऋग्वेद में कहा गया है कि जो देश की रक्षा बाहरी शत्रुओं से करते हैं, जो देश की प्रजा के लिए उत्तम व्यवस्था करते हैं और जो समाज में ज्ञान के प्रसार में लगे रहते हैं, वे सभी राष्ट्र के आदरणीय नेता हैं। बच्चो, अब तुम आदर्श नेता के गुण तो समझ ही गए होंगे! तुम सब इन्हीं तीन तरह के नेताओं के गुणों से लैस होकर देश के विकास में अपना योगदान करना।

वैदिक काल की विद्या न सिर्फ व्यक्ति को विकास का मार्ग दिखाती थी, बल्कि सामाजिक सद्भाव, एकता और विश्वबंधुत्व की स्थापना पर भी बल देती थी। ऋग्वेद में एक अत्यंत महत्वपूर्ण संदेश दिया गया है, जो निस्संदेह विश्व का पहला उच्च कोटि का सद्भावना-संदेश है—*हमारी भाषा दूसरी भाषाओं से मिल जाए, मनुष्य की और देवता की बुद्धि एक हो, हमारा ज्ञान अन्य लोगों के ज्ञान के साथ आत्मसात हो जाए और इस प्रकार भाषा, संस्कृति और देश का परस्पर भेद समाप्त हो जाए—सभी एक मंच पर आ जाएं।* विश्वबंधुत्व का यह पहला संदेश अब तक का सबसे अच्छा संदेश है—किसी भी सभ्यता के ज्ञानसम्पन्न होने की कसौटी भी यही है। ❑

—'रश्मितरु'
444, सेक्टर-21, फरीदाबाद, हरियाणा

चित्र बनाओ प्रतियोगिता

(मार्च 2005)

इस कूपन के साथ 25 मार्च, 2005 तक **स्कूल की पिकनिक** शीर्षक पर आधारित एक आकर्षक चित्र बनाकर हमारे पास भेजें। पुरस्कृत चित्र को बाल भारती में प्रकाशित किया जाएगा। प्रथम विजेता को दो वर्ष एवं द्वितीय को एक वर्ष तक हमारी ओर से बाल-भारती मुफ्त भेजी जाएगी।

नाम ..... आयु .....

पता .....

.....

इस प्रतियोगिता में 14 वर्ष तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं।

लील गईं लहरें जीवन

—देवेंद्र मेवाड़ी

उस दिन बहुत उदास बैठे थे देवीदा। डोरबेल बजी तो उनका ध्यान भंग हुआ। दरवाजा खोला। गार्गी, मानसी, मनु, गौतम और दूसरे बच्चे खड़े थे। बहुत मायूस। उनकी पीड़ा चेहरे पर साफ झलक रही थी। कितना उछल-कूद कर आते थे, विज्ञान के सवाल पूछते थे, लेकिन आज उनकी आंखें आंसुओं से भरी हुई थीं।

"क्या हुआ?" जानते हुए भी गार्गी के सिर पर हाथ फेरते हुए देवीदा ने पूछा।

"बहुत बुरा हुआ देवीदा। समुद्र की सुनामी लहरों ने लाखों लोगों का जीवन छीन लिया? उनका क्या दोष था?" शबनम बोली।

"कोई दोष नहीं था। वे तो हर रोज की तरह अपना काम कर रहे थे। मछुआरे सागर में मछलियां पकड़ रहे थे। उनके बच्चे और उनके परिवार बस्तियों में हंस-खेल रहे थे। सैलानी सागर तटों पर धूप का आनंद ले रहे थे। किसी को अचानक आने वाले खतरे की कोई खबर नहीं थी मेरे नन्हे दोस्तो।" कहते-कहते देवीदा का गला भर आया।

मानसी और प्रिया अपनी सिसकी न रोक सकीं। बाकी बच्चे भी आंखें पोंछने लगे। देवीदा ने देखा कि बच्चों के हाथों में छोटे-छोटे लिफाफे थे।

उम्र में थोड़ा बड़े विक्रम ने पूछा, "ऐसी विपदा क्यों आती है देवीदा, जो इतना विनाश कर जाती है?"

"कोई नहीं जानता विक्रम कि कब धरती का सीना बेचैन होकर फट पड़े और वह समंदर के पानी को पूरी ताकत से उछाल कर, उलीच कर विशाल लहरों में बदल दे।"

"मतलब कि इस बार यह तबाही धरती का सीना फटने से हुई?" गौरव ने पूछा।

"हां, कहते हैं इस भयंकर



भूकंप से समुद्र की तलहटी में डेढ़ से तीन मीटर तक चौड़ी दरार बन गई है। लेकिन अभी यह पता नहीं चला है कि यह दरार कितनी दूर तक बनी है।'' देवीदा ने कहा और किताबों की अलमारी से विश्व का मानचित्र निकाल कर बोले, ''ये देखो तुम लोग। इंडोनेशिया में सुमात्रा द्वीप के उत्तरी भाग के पास यहां सागर की तलहटी में भयंकर भूकंप आया जिसने पानी में हलचल मचा दी। भूकंप वैज्ञानिकों का कहना है कि इस झटके की ताकत रिक्टर पैमाने पर 9 थी।''

''ये रिक्टर पैमाना क्या है देवीदा?'' गार्गी ने पूछा।

''रिक्टर पैमाने से भूकंप के झटके की ताकत का पता लगता है। पैमाने पर 6 या 7 तक का झटका भी भारी नुकसान कर सकता है। 9 तो बहुत विनाशकारी है।'' देवीदा बोले।

''अच्छा देवीदा, समुद्र के भीतर भूकंप का झटका आखिर आता क्यों है?'' प्रिया ने जानना चाहा।

''इसलिए, क्योंकि टक्कर होगी तो झटका लगेगा?'' देवीदा ने कहा।

''टक्कर? टक्कर कैसी?'' गौतम ने पूछा।

देवीदा ने समझाया, ''हमारी पृथ्वी विशाल चट्टानों की प्लेटों से बनी है, अभी दिखाता हूं, इस तरह!'' कहकर देवीदा किचन में गए और एक अंडा उठा लाए। उसे दिखाकर बोले, ''ये देखो अंडा छिलके की परत से ढका है ना?'' बच्चे बोले, ''हां।''

''अब देखो,'' उन्होंने अंडे को दो-तीन बार धीरे-धीरे मेज पर मारा और फिर दिखाया, ''यह परत कई जगह से टूट गई है। उसमें दरारें बन गई हैं। भीतर मुलायम सफेदी और गोल जर्दी है। हमारी पृथ्वी का भी यही हाल है। यह भी हजारों किलोमीटर लंबी और 80 किलोमीटर तक मोटी अलग-अलग प्लेटों से बनी है। उनके बीच दरारें हैं। भीतर धधकता हुआ पोला लावा वगैरह भरा है। जब ये चट्टानें जरा-सा भी खिसकती हैं या टकराती हैं तो भयानक झटका लगता है। इस बार आस्ट्रेलिया और यूरेशिया की प्लेट टकरा गई। उसी से समुद्र के भीतर भयंकर भूकंप आया और तबाही मचाने वाली सुनामी की विशाल लहरें पैदा हो गईं।''

''छि: नाम सुनामी और काम बर्बादी।'' मानसी ने घृणा से कहा।

''बात तो ठीक है मानसी! असल में इन तबाही मचाने वाली



समुद्री लहरों का नाम जापानी 'त्सु नामी' है। मतलब बंदरगाह की लहरें। बोलने में सुनामी कह देते हैं।'' देवीदा ने बताया।

''देवीदा, हमने अखबार में पढ़ा कि ये बहुत ऊंची, मकानों से भी ऊंची होती हैं और बहुत तेज चलती हैं।'' चेतन ने कहा।

''तुमने ठीक पढ़ा चेतन। सुनामी लहरें 100 फुट तक ऊंची हो सकती हैं। ये बिल्कुल पानी की मोटी दीवाल की तरह समुद्र में आगे बढ़ती हैं। इनकी चाल 500 से 600 किलोमीटर प्रति घंटे होती है और यह अपने साथ सागर तट की चट्टानों, मनुष्यों, जीव-जंतुओं, झोपड़ियों, मकानों, नावों और यहां तक कि भारी चट्टानों को भी रौंद कर बहा देती हैं।'' देवीदा ने कहा।

''इसीलिए तो इतनी भीषण तबाही मच गई,'' विक्रम बोला।

''हां विक्रम, करीब 13 देशों में इनसे नुकसान हुआ। पर इंडोनेशिया, थाइलैंड, श्रीलंका, भारत और मालदीव में इन्होंने अधिक तबाही मचाई। अब तक 1,66,000 से भी ज्यादा लोग मारे गए हैं। इनमें से एक-तिहाई बच्चे हैं।'' देवीदा बोले।

''मतलब कि ये लहरें 55,000 से अधिक बच्चों का जीवन लील गईं,'' कहते हुए गौरव के आंसू टपक पड़े। बाकी बच्चों की आंखें भी नम हो गईं।

''नन्हे दोस्तो, इतना ही नहीं हजारों बच्चों के माता-पिता इन लहरों के शिकार हो गए। सुनामी की क्रूर लहरें उन्हें अनाथ बना गईं। हम सबको उन बच्चों की मदद करनी है,'' देवीदा ने कहा।

''हम अपनी जेब खर्च के पैसे ले आए हैं देवीदा। इन्हें हम कैसे भेजें?'' गार्गी बोली।

देवीदा ने गार्गी को गले लगा लिया। फिर बोले, ''शाबाश बच्चो, मुझे तुमसे यही आशा थी। हम लोग ये पैसे जमा करेंगे। अपने साथियों से भी दान देने को कहेंगे और फिर सारे पैसे रेडक्रास को दे देंगे। वे इनसे विपत्ति में पड़े बच्चों की मदद करेंगे।''

इतना कहकर देवीदा ने उन्हें बताया कि इस भारी संकट की घड़ी में कैसे कुछ बच्चों ने दूसरों को बचाया और कैसे कई बच्चे भयानक सुनामी लहरों से बचे। उन्होंने यह भी बताया कि कई मासूम बच्चों को तेज लहरें मां-बाप की गोद से छीन ले गईं।

देवीदा बोले, ''बच्चों की मदद के लिए बनी संयुक्त राष्ट्र की संस्था यूनिसेफ सुनामी से पीड़ित बच्चों के लिए बड़े पैमाने पर क्रेयान रंग, कागज और क्ले वगैरह भेज रही है।''

''वे इनसे क्या करेंगे देवीदा?'' शबनम ने पूछा।

''चित्र और मूर्तियां बनाएंगे। दोस्तो, चित्र और मूर्तियां बनवाने के पीछे भी एक बात है।''

''क्या बात है?'' मानसी ने पूछा।

''उन पीड़ित बच्चों का मानसिक इलाज,'' देवीदा ने कहा।

''इलाज? चित्र बनाकर इलाज कैसे हो जाएगा?'' इस बार शबनम ने पूछा। सभी बच्चे हैरान थे कि इलाज का यह कैसा तरीका है?

''कहते हैं ना कि दु:ख बांटने से कम हो जाता है। मतलब ये है कि बच्चों के मन पर सुनामी से जितनी गहरी चोट लगी है, उसे अगर वे चित्र बनाकर या तरह-तरह के आकार और मूर्तियां बनाकर बता दें तो उनके मन का बोझ कम हो जाएगा। वे सदमे से बाहर निकल सकेंगे। मनोवैज्ञानिक इसी तरह इलाज करते हैं।'' देवीदा ने उन्हें समझाया।

''लेकिन, सुनामी लहरों से हुई तबाही को वे सब कैसे भूल पाएंगे?'' मायूस होकर चेतन ने पूछा।

''दु:ख को भुलाना जरूर मुश्किल होता है चेतन, लेकिन फिर भी इसे भुलाने की कोशिश करनी पड़ती है। तभी जीवन आगे बढ़ता है। सुनामी से पीड़ित बच्चों को अब हम सबका प्यार चाहिए, सहारा चाहिए। हमें ये कोशिश करनी चाहिए कि वे भी दु:ख भुला सकें और याद रख सकें कि हम उनके साथ हैं।'' देवीदा ने समझाया।

नंदू भी बीच में आकर चुपचाप बैठ गया था। अब बोला, ''देवीदा जब हम आदमियों पर इतनी बड़ी

विपत्ति आ गई तो बेचारे मूक और असहाय पशु-पक्षियों का क्या हुआ होगा?''

''नंदू, पता लगा है कि ज्यादातर पशु-पक्षी सुनामी के कहर से साफ बच गए हैं।''

''अजीब बात है। आदमी लाखों मर गए, लेकिन बेसहारा पशु-पक्षी बच गए।'' अरुण ने हैरान होकर कहा।

''इसमें आश्चर्य की बात नहीं है अरुण। असल में जिस प्रकृति ने इतनी बड़ी विपदा दी उसी ने उन्हें बचाया भी।'' देवीदा ने कहा तो सभी बच्चों ने आश्चर्य से उनकी ओर देखा। उन्होंने अपनी बात पूरी करते हुए कहा, ''पशु-पक्षी प्रकृति के नियमों का पालन करते हैं। हमारी तरह भौतिक सुखों की दौड़ में उन्होंने प्रकृति को भुलाया नहीं है। इसलिए वे उसकी चेतावनी भरी आवाज सुन लेते हैं।''

''कैसे सुन लेते हैं देवीदा?'' गार्गी ने पूछा।

''ऐसे कि जब समुद्र के भीतर भूकंप का भयंकर झटका आया तो धरती कांपी होगी। थाइलैंड के खाओ-लाक समुद्र तट के सभी हाथियों ने जोर से चिंघाड़ना शुरू कर दिया। उन्हें भूकंप का पता लग गया और घंटे भर बाद जब सुनामी की विशाल लहरें उनकी ओर बढ़ी होंगी तो वे चिंघाड़ कर ऊंचे जंगलों की ओर दौड़ पड़े। उनके पीछे-पीछे महावत और सैर पर आए सैलानी भी दौड़ पड़े और वे सभी बच गए। जानते हो, जहां से वे भागे थे उस इलाके में 3800 लोग मारे गए। श्रीलंका के याला राष्ट्रीय पार्क में भी इसी तरह हाथियों ने जान बचाई। 13 वर्ग किलोमीटर में फैले इस राष्ट्रीय पार्क में किसी भी पशु या पक्षी का शव नहीं मिला। तमिलनाडु के कुड्डालोर में भी कुत्ते, गाएं, बकरियां ऊंची जगहों में भाग गए। तो बोलो, उन्होंने सुनी ना प्रकृति की आवाज?'' देवीदा ने पूछा।

''सुनी देवीदा, लेकिन फिर आदमी क्यों नहीं सुनते?'' गौरव ने प्रश्न किया।

''सुनते हैं। वे भी सुनते हैं लेकिन वही, जो प्रकृति के बहुत पास रहते हैं। अंडमान और निकोबार द्वीपों के अधिकतर आदिवासी बच गए। जानते हो क्यों? क्योंकि उन्होंने सागर का पानी पीछे हटते देखा, पक्षियों की चीखें सुनीं और जीव-जंतुओं को जंगलों में ऊंचे स्थानों की ओर भागते देखा। वे भी जंगलों में ऊंचे स्थानों की ओर भाग गए।''

''और सुनो'' देवीदा ने बच्चों की ओर देखते हुए कहा, ''एक 10 साल की बच्ची टिली ने थाइलैंड के फुकेट द्वीप में बड़ी संख्या में लोगों की जान बचा ली। उसने अपनी किताब में पढ़ा था, जब समुद्र का पानी तेजी से पीछे हट रहा हो तो वह बहुत तेजी से वापस आता भी है। उसे आभास हुआ कि सुनामी की विनाशकारी लहरें भयंकर तेजी से वापिस आएंगी। उसने जब पानी को पीछे हटते



देखा तो पास खड़े लोगों को बताया। उन्होंने उसकी बात मान ली और ऊंची जगह की ओर भाग गए। उनकी जान बच गई। अंडमान, निकोबार के आदिवासियों के पुरखे भी यही कहते थे। उन लोगों को यह याद था।''

''देवीदा, सुनामी की लहरें जब समुद्र तट पर तबाही मचाने के लिए दौड़ती हैं तो इसकी खबर पहले क्यों नहीं मिल जाती?'' प्रिया ने पूछा।

''यही तो अफसोस है प्रिया। सुनामी जहां से शुरू हुईं वहां ये 2000 किलोमीटर दूर हमारे देश के सागरतटों तक पहुंचने में उन्हें तीन-चार घंटे लगे। लेकिन, किसी को इसका पता नहीं चला अन्यथा हजारों लोग भागकर जान बचा सकते थे। हमें इससे सबक लेना चाहिए और भविष्य में ऐसी विपदा आने पर तुरंत लोगों को उपग्रहों, टेलीफोन, रेडियो, टेलीविजन आदि से सूचित कर देना होगा। अभी तो यही प्रार्थना कर सकते हैं कि दुबारा ऐसी प्राकृतिक विपदा न आए और जो इस विपदा से इस बार पीड़ित हुए हैं उन्हें जीने का साहस मिले। चलो हम लोग उनकी सहायता के लिए लोगों का सहयोग मांगें।'' देवीदा ने कहा और फिर बच्चों के साथ सुनामी पीड़ितों की सहायता के लिए लोगों का सहयोग लेने निकल पड़े। ❑

—सी-22, शिव भोले अपार्टमेंट्स
सैक्टर-7, द्वारका फेज-1,
दिल्ली-110075

ऐसे बचे वे बच्चे

- 13 वर्ष की मेघना राजशेखर को सुनामी की लहरें उसके घर के भीतर से बहा ले गईं। उसने एक टूटा दरवाजा पकड़ लिया। दो दिन तक वह उसी दरवाजे के साथ तैरती रही। उसके मां-बाप सुनामी में लापता हो गए। मेघना का पालन-पोषण अब आंध्र प्रदेश में होगा।
- मलेशिया के पेनांग द्वीप में 20 दिन का बच्चा तुलसी एक गद्दे पर तैरता हुआ पाया गया। उसे बचाव दल ने बचा लिया।
- दरवाजे ने ही लाची नामक 5 वर्ष के बच्चे की भी जान बचाई। जब लहरें कमरे में घुसीं तो उन्होंने मां जिलियन के हाथों से लाची और उसके छोटे भाई ब्लैक को जोर से झटक दिया। ब्लैक मां के हाथ आ गया लेकिन लाची दो घंटे बाद दरवाजे के साथ समुद्र में तैरता हुआ मिला।
- 6 वर्ष की जोए शियू थाइलैंड में घर पर खेल रही थी कि सुनामी उसे बहा ले गई। लेकिन उसके हाथ एक कुशन आ गया। वह उसके सहारे तैरी और फिर एक नाव पकड़ ली। वह बच गई।
- कजाखिस्तान का एक 18 माह का बच्चा एक भारतीय को गद्दे पर तैरता हुआ मिला। उसे कजाखी दूतावास को सौंप दिया गया।
- अकेह, इंडोनेशिया में 23 वर्ष के एक लड़के ने 10 दिन तक एक उखड़े-बहते पेड़ पर बैठकर जान बचाई। वह तट से 160 कि.मी. दूर समुद्र में मिला। उसने वर्षा का पानी पिया और बहते नारियलों से भूख मिटाई।
- 7 वर्ष के अरविंद सीताराम और 9 वर्ष के फरसान की जान भी पेड़ पर बची।
- कार निकोबार में जरावा जनजाति की 28 वर्षीय ब्रैंडिना सुनामी लहरों में बहने पर तीन दिन तक एक पेड़ की टहनी पर चमगादड़ की तरह लटक कर जीवित रही। उसने पत्तियां चबाईं और पेड़ की छाल से पानी चूसा।
- केन्या, अफ्रीका के सागर तट से सुनामी एक दरियाई घोड़े (हिप्पोपोटेमस) के एक साल से भी छोटे बच्चे को बहा ले गई। लहरें उसे तट पर ले आईं। वहां उसे एक विशाल कछुवा मिला। वह कछुए को ही अपनी मां मान कर उसके साथ रह रहा है। कछुवा भी उसे प्यार दे रहा है।

होली का हुड़दंगा रे!

—डॉ. देशबन्धु 'शाहजहांपुरी'

जिधर भी देखो, उधर हो रहा,
होली का हुड़दंगा रे।

खेतों में इतराकर सरसों,
ने फैलायी पीली चूनर।
पुष्पों ने भी मस्त पवन संग,
बिखराई खुशबू जी भरकर॥

कर डाला है सबने मिलकर,
फागुन को बहुरंगा रे।

रंग-बिरंगे, रंग-गुलाल से,
लाल हो गए नभ के बादल।
अपनेपन के रंग में भीगा,
धरती मां का प्यारा आंचल॥

कीचड़, गोबर से तुम इसको,
नहीं करो बदरंगा रे।

इसी होलिका में कर दो तुम,
स्वाहा घृणा, द्वेष, नफरत को।
लगा नेह-रंग, गले मिलो जब,
सारे पल होंगे अद्‌भुत वो॥

भागेगा कटुता का दानव,
होगा तब मन चंगा रे।

256, खलील शर्की, शाहजहांपुर-242001 (उ.प्र.)





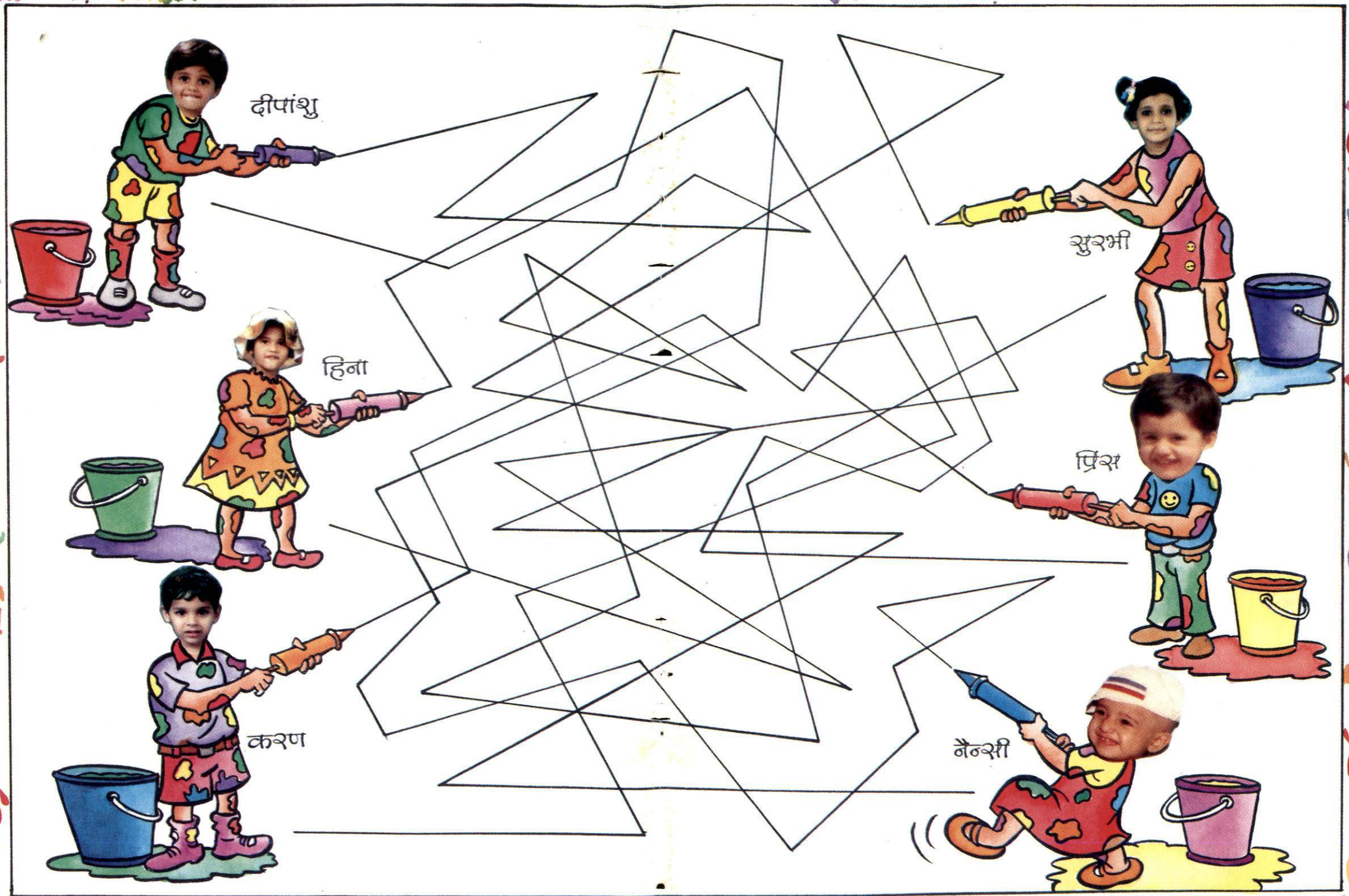
छाया : ओम मिश्रा



छाया : सर्वेश

होली पहेली

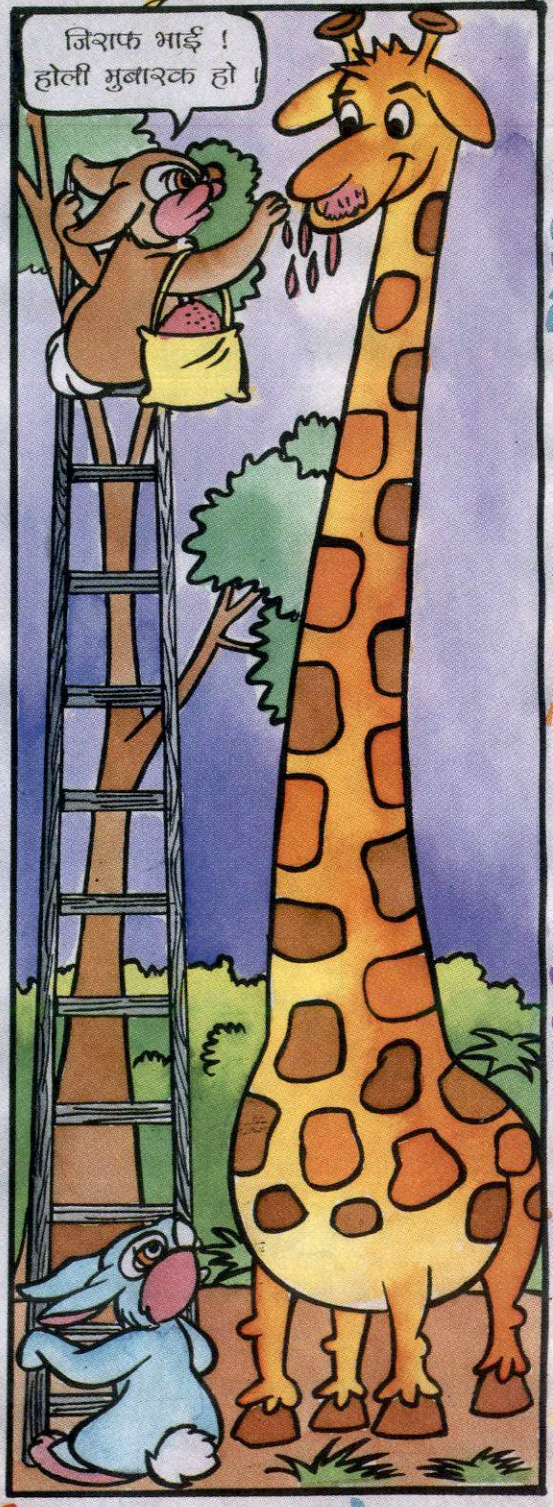
यहां दिये चित्र में कुछ बच्चे होली पर एक दूसरे पर रंग डाल रहे हैं परन्तु यह नहीं पता लग रहा कि कौन किस पर रंग डाल रहा है। चलो तुम इनके साथ शामिल हो जाओ और जरा पता लगाओ कि कौन किस पर रंग डाल रहा है अगर पता न चले तो बाल भारती को उल्टा करके उत्तर जान लें।



उत्तर :- दिपांशु सुरभी पर, हिना करण पर, करण प्रिंस पर, प्रिंस हिना पर नैन्सी दीपांशु पर रंग डाल रही है।

जंगल में होली


होली के लिए मैंने यह स्पेशल चश्मा बनवाया है जिससे मैं दिन में भी देखकर होली खेल सकूं ।


जिराफ भाई ! होली मुबारक हो ।


आज होली है हमारे ऊपर कोई रंग चढ़ेगा नहीं इसलिए तुम होली सफेद रंग से खेलना ।
अच्छा मम्मी !
कोयल अपने बच्चे से–

विटामिन महिमा

—डॉ. प्रदीप मुखोपाध्याय 'आलोक'

विज्ञान गोष्ठी में आज चर्चा विटामिनों पर हो रही थी। अनन्य कुलश्रेष्ठ बच्चों को बता रहे थे, ''जैसा कि हम जानते हैं, हमारे शरीर की वृद्धि और स्वास्थ्य के लिए हमें अनेक पोषक तत्वों की जरूरत पड़ती है, जैसे प्रोटीन, विटामिन, खनिज लवण आदि। जो भोजन हम खाते हैं उनसे ये तत्व हमें प्राप्त होते हैं। हमारे शरीर को विटामिनों की बस थोड़ी ही मात्रा में जरूरत पड़ती है, लेकिन यह कम मात्रा भी बहुत आवश्यक होती है। विटामिनों की कमी से हमारा शरीर ठीक तरह से काम नहीं कर सकता तथा हम कई तरह की बीमारियों के शिकार भी हो सकते हैं।''

राजन ने पूछा, ''विटामिन की खोज किसने की थी, अंकल?'' अनन्य अंकल बोले, ''राजन! फंक नामक वैज्ञानिक ने ही 1912 में पहले-पहल 'विटामिन' शब्द का इस्तेमाल किया था। हाफ्किंस के साथ मिलकर फंक ने अपना 'विटामिन सिद्धांत' भी दिया था। हालांकि विटामिन का नामकरण फंक ने ही किया था, पर ऐसा कहा जाता है कि लुनिन नामक वैज्ञानिक ने ही 1881 में विटामिन की खोज की थी। अच्छा, यह कौन बताएगा कि विटामिन कितने किस्म के होते हैं?''

श्वेता झट बोल पड़ी, ''अंकल, मैं बताऊंगी। विटामिन ए, बी, सी, डी, ई तथा के छह किस्म के होते हैं। इनमें से विटामिन बी के कई





प्रकार होते हैं। जैसे बी-1, बी-2, बी-6, बी-12 आदि।''

सुनकर मुस्करा दिए अंकल। बोले, ''श्वेता, तुमने मोटे तौर पर सही बताया है। पर विटामिन मुख्यतया दो प्रकार के होते हैं। एक तो वे जो पानी में घुलनशील होते हैं तथा दूसरे वे जो वसा यानी फैट में घुलनशील होते हैं। जल में घुलनशील विटामिन हैं विटामिन बी तथा सी जबकि ए, डी, ई और के ऐसे विटामिन हैं जो वसा में घुलनशील होते हैं। चलो, विटामिन सी से ही शुरू करते हैं। जया, तुम बताओ कि विटामिन सी किन चीजों में पाया जाता है?''

जया बोली, ''अंकल, विटामिन सी हरी मिर्च में पाया जाता है क्योंकि इसे खाने पर हम सी-सी कर उठते हैं।''

जया की बात सुनकर सब हंस पड़े। अनन्य अंकल बोले, ''जया ने बात तो ठीक कही है। हालांकि हरी मिर्च खाकर सी-सी करने की बात चुटकुले के रूप में ही कही जाती है। हरी मिर्च ही क्यों, हरी सब्जियों तथा नींबू जाति के खट्टे व पीले फलों में भी विटामिन सी पाया जाता है, जैसे नींबू, संतरा, माल्टा, मौसमी आदि। इनके अलावा आंवला, अमरूद, टमाटर आदि में भी विटामिन सी मौजूद होता है। आंवला तो विटामिन सी का सबसे अच्छा प्राकृतिक स्रोत माना जाता है।''

ख्याति पूछ बैठी, ''अंकल, हरी मिर्च खाकर आखिर हम सी-सी क्यों करते हैं?''

अंकल बोले, ''ख्याति, हरी मिर्च में जो चरपराहट या तीखापन होता है, उससे मुंह में जलन मचती है जिससे हम सी-सी कर उठते हैं। हरी मिर्च का तीखापन उसमें पाए जाने वाले कैप्सेसिन नामक रसायन के कारण होता है। तुम्हारी जानकारी के लिए रोचक बात यह है कि मिर्च के चरपरेपन को मापने के लिए रसायनविद विल्बर स्कोविले के नाम पर एक स्कोविले नामक पैमाना भी बना है। इस पैमाने पर मैक्सिको में पाए जाने वाले रेड सेविना हबानीरो नामक मिर्च का तीखापन 3,00,000 स्कोविले इकाई है। असम में पाई जाने वाली हमारे देश की नागा जोलोकिया नामक तेजपुर प्रजाति अब संसार की सबसे तीखी मिर्च मानी जाती है। इसका तीखापन 8,55,000 स्कोविले इकाई है।''

सिद्धार्थ ने पूछा, ''अंकल, मिर्च संबंधी बहुत रोचक बातें आपने बताईं। लेकिन, मिर्च खाने से आखिर मुंह में जलन क्यों मचती है?'' अंकल ने जवाब दिया, ''सिद्धार्थ, मिर्च खाने पर इसमें मौजूद कैप्सेसिन



जीभ में स्थित स्वादग्राही अणुओं के साथ जुड़कर विद्युत संकेत उत्पन्न करता है। ये संकेत मस्तिष्क में पहुंचते हैं जिससे जीभ में जलन का अहसास होता है।''

अब तक चुप बैठे पुलक ने मुंह खोला, ''अंकल, विटामिन सी के बहाने मिर्च के बारे में इतनी बातें हमें जानने को मिलीं। विटामिन सी की कमी से स्कर्वी नामक रोग हो जाने की बात पाठ्यपुस्तक में हमें पढ़ने को मिलती है। इस बीमारी से मसूड़े तथा दांत कमजोर हो जाते हैं और मसूड़ों से खून भी आने लगता है। विटामिन सी से जुड़ी कुछ और भी बातें हमें बताइए, अंकल।''

अनन्य अंकल बोले, ''पुलक, विटामिन सी को एस्कार्विक एसिड भी कहते हैं। शरीर में रक्त वाहिकाओं को दुरुस्त रखने तथा दांतों व हड्डियों को स्वस्थ रखने के लिए इस विटामिन की बहुत आवश्यकता होती है। सर्दी-जुकाम तथा फ्लू आदि रोगों के विरुद्ध शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में भी इसकी भूमिका होती है। हाल ही में किए गए अनुसंधानों से यह बात सामने आई है कि प्रचुर मात्रा में विटामिन सी के सेवन से हृदय रोगों की संभावना भी कम हो जाती है।''

राजन ने पूछा, ''अंकल विटामिन बी की कमी से क्या होता है तथा खाने की किन चीजों में यह विटामिन पाया जाता है?''

अंकल बोले, ''राजन, विटामिन बी की कमी से शरीर में आलस्य, थकान, खून की कमी आदि के लक्षण दिखाई दे सकते हैं। इसकी कमी मानसिक उलझन तथा पाचन क्रिया की गड़बड़ी भी पैदा कर सकती है। विटामिन बी हमें हरी पत्तेदार सब्जियों, दाल, दूध, अंडा, लिवर, मांस, सोयाबीन, गेहूं, चावल आदि के द्वारा प्राप्त होता है। यह विटामिन कई किस्म का होता है, जैसे बी-1, बी-2, बी-3, बी-5, बी-6, बी-7, बी-12 आदि। विटामिन बी-1 को थाइमीन, बी-2 को राइबोफ्लेविन तथा बी-7 को बायोटोनिन कहते हैं। इसी तरह बी-3 को निकोटिनिक एसिड या नियासीन कहते हैं। विटामिन बी-5 को पैंटोथीनिक एसिड जबकि बी-6 को पाइरोडॉक्सिन कहते हैं। विटामिन बी-12 कोबाइलएमिन कहलाता है। इस विटामिन में कोबाल्ट मौजूद होता है। जो हमें मांस, लिवर, मछली, अंडे तथा दूध से प्राप्त होता है। इनके अलावा फोलिक एसिड भी विटामिन बी समुदाय का ही एक विटामिन होता है। हरी सब्जियों के अलावा मांस, लिवर, अंडे, दालों आदि में यह पाया जाता है। शरीर में खून को ठीक से बनाने में इस विटामिन की भूमिका होती है। इसकी कमी से शरीर में रक्त कोशिकाओं के बनने में कठिनाई आती है।''

सिद्धार्थ ने पूछा, ''अंकल, विटामिन बी की कमी से बेरी-बेरी रोग हो जाता है, यह जानकारी पाठ्यपुस्तक द्वारा हमें प्राप्त होती है। यह विटामिन बी की किस किस्म की कमी के कारण होता है?''

जवाब में अंकल बोले, ''सिद्धार्थ, बेरी-बेरी रोग विटामिन बी-1 की कमी के कारण होता है। इस बीमारी का शिकार व्यक्ति मांसपेशियों और स्नायुओं में कमजोरी की शिकायत करता है। उसे भूख कम लगती है तथा उसके वजन में भी गिरावट आने लगती है जिससे उसका विकास बाधित होता है। गेहूं के चोकर तथा चावल के छिल्कों में विटामिन बी-1 होता है। अत: चोकर या भूसी सहित आटे का ही इस्तेमाल करना चाहिए तथा पालिश किए गए यानी छिल्का उतारे गए चावल की जगह सेला चावल का ही प्रयोग करना चाहिए। तुम लोगों को शायद पता होगा कि दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान जर्मनी और जापान के युद्धबंदी शिविरों में अनेक युद्धबंदी बेरी-बेरी रोग के कारण या तो शरीर से बहुत लाचार हो गए या चल बसे। पहले समुद्री यात्रा करते नाविक या मछेरे बाज दफा मछलियां पकड़कर उन्हें बिना भूने ही खा जाया करते थे। इससे विटामिन बी या थाइमीन की कमी के कारण वे लकवे का शिकार हो जाया करते थे क्योंकि बिना पकी मछली में एक एंजाइम होता है जो थाइमीन को नष्ट कर देता है। लेकिन मछली को पकाने पर ऐसा कोई खतरा नहीं रहता है क्योंकि ऊष्मा

के असर से यह एंजाइम नष्ट हो जाता है।''

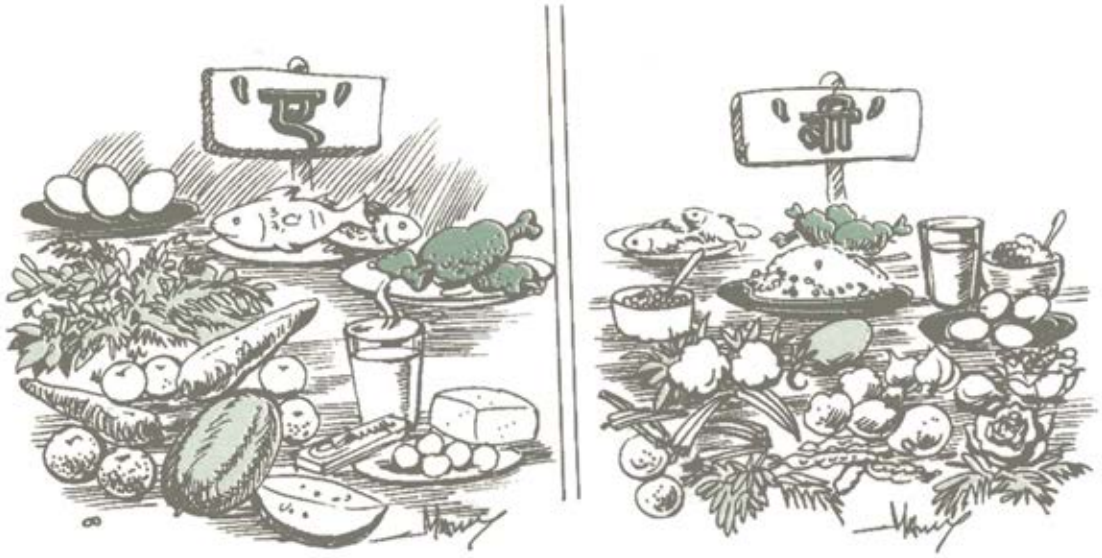
ख्याति बोली, ''अंकल, धूप में बैठने पर हमें विटामिन डी प्राप्त होता है, हमारे टीचर ने यह बात हमें बताई है। यह और किन चीजों से हमें प्राप्त होता है?''

अंकल ने जवाब दिया, ''ख्याति, धूप में विटामिन डी नहीं होता है बल्कि धूप में हमारी त्वचा इस विटामिन का निर्माण करती है। दूध व दूध से बने पदार्थों, मछली और मछली के तेल यानी कॉड लिवर आयल आदि में प्रचुर मात्रा में विटामिन डी पाया जाता है। शरीर, दांत व हड्डियों को मजबूत बनाने में इस विटामिन की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शरीर की हड्डियों में कैल्सियम व फास्फोरस के संतुलन को बनाए रखने में भी इस विटामिन की जरूरत होती है। इसकी कमी से बच्चों में रिकेट्स की बीमारी हो जाती है जिसके असर से उनकी हड्डियों में टेढ़ापन आ जाता है।

विटामिन ए की भी शरीर की वृद्धि, आंखों की ज्योति व त्वचा को तंदुरुस्त बनाए रखने में बड़ी अहम् भूमिका होती है। इसकी कमी से रतौंधी हो जाती है। इस बीमारी में रोगी को शाम व अंधेरे में देखने में परेशानी होती है। समय पर इलाज न कराने पर इस बीमारी के कारण अंधापन भी हो सकता है। विटामिन ए पालक, गाजर, मछली, अंडा, दूध व दूध से बनी चीजों में प्रचुरता से पाया जाता है। इसके अलावा पपीता, संतरा, आम आदि फलों में भी विटामिन ए मौजूद होता है।''

श्वेता बोली, ''अंकल, लगे हाथों विटामिन ई और विटामिन के के बारे में भी थोड़ी जानकारी हमें दे दीजिए।''

श्वेता की बात सुनकर अनन्य अंकल बोले, ''ठीक है, श्वेता! विटामिन ई, जिसे टोकोकेरॉल भी कहते हैं, मूंगफली, वनस्पति तेलों, हरी सब्जियों, टमाटर, अंडे की जर्दी, दूध, पनीर, मक्खन आदि में पाया जाता है। इसके अलावा अंकुरित अनाज और दालों में भी विटामिन ई प्रचुरता से मिलता है। त्वचा को स्वस्थ रखने, रक्त निर्माण, हृदय रोग से बचाने तथा प्रजनन प्रकिया में इस विटामिन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विटामिन के पालक, धनिया, टमाटर, संतरा, मछली, लिवर आदि में पाया जाता है। अत्यधिक खून के बहाव को रोकने तथा खून का थक्का जमाने में इस विटामिन का बहुत महत्व होता है।''



(शेष पृष्ठ 46 पर)

बात हिसाब की

—मदन 'राज'

राम, श्याम और मोहन तीनों दोस्त थे। तीनों ही खेतों में मेहनत-मजदूरी कर अपना गुजर-बसर करते थे। एक बार गांव में अकाल पड़ गया और कृषि-मजदूरों के सामने रोजी-रोटी की समस्या खड़ी हो गई। भूख और बेरोजगारी से परेशान तीनों दोस्तों ने मजदूरी की तलाश में शहर जाने का निश्चय किया। दूसरे दिन बड़े सवेरे तीनों दोस्त शहर की ओर चल पड़े। चलते-चलते सुबह से दोपहर हो गई। धूप तेज थी और भूख भी सताने लगी थी। अत: तीनों दोस्त, घनी छाया वाला एक पेड़ देखकर उसके नीचे बैठ गए।

तीनों ने अपनी-अपनी रोटियां निकालीं। राम के पास एक, श्याम के पास दो और मोहन के पास तीन रोटियां थीं। तीनों दोस्त खाना खाने की तैयारी कर रहे थे। तभी एक आदमी, सिर पर एक टोकरी रखे, वहां आया। उन्होंने उस आदमी से भी खाना खाने के लिए पूछा। चारों ने रोटियों को बराबर बांटकर खा लिया।

थोड़ी देर तक विश्राम करने के बाद चारों आदमी शहर की ओर चल पड़े। और शाम होते-होते शहर पहुंच गए। बिछुड़ने से पहले उस आदमी ने अपनी टोकरी में से निकाल कर मोहन को तीन पपीते देते हुए कहा, ''मैंने तुम्हारी रोटी खाई है, उसके बदले में ये पपीते दे रहा हूं। तुम तीनों इन्हें हिसाब से बांटकर खा लेना।''

तीनों दोस्त रात्रि विश्राम के लिए एक धर्मशाला में रुक गए। मोहन ने राम और श्याम को एक पपीता देते हुए कहा, ''खाने के लिए रोटी तो हमारे पास बची नहीं है, इसलिए पपीते खाकर ही रात गुजारनी पड़ेगी। तुम्हारे पास मेरी रोटियों से कम रोटियां थीं, इसलिए तुम दोनों को एक पपीता ही मिलेगा और मैं दो पपीते ले रहा हूं।''

राम और श्याम ने इसका विरोध किया और कहा, ''यह तो बेईमानी है। उस आदमी ने पपीते देते वक्त साफ कहा था कि इन्हें तुम तीनों बराबर बांट लेना। इसलिए हमें इनको तीन हिस्सों में बराबर बांट लेना चाहिए।''

बराबरी का तो प्रश्न ही नहीं उठता, क्योंकि उस आदमी ने स्पष्ट रूप में कहा था कि हम ये पपीते 'हिसाब से' बांट लें। यही मैंने किया है। मोहन ने कहा।

राम और श्याम अपनी बात पर अड़ गए। कुछ देर की नोंक-झोंक





के बाद, पपीतों का बंटवारा किसी चौथे आदमी से कराने की बात पर सहमत होकर, तीनों दोस्त धर्मशाला के मैनेजर के पास पहुंचे।

धर्मशाला के मैनेजर ने तीनों की बात ध्यान से सुनी। कुछ देर तक सोचने के बाद उसने अपना निर्णय सुनाते हुए कहा, "राम और श्याम सुनो। हिसाब से तो तुम्हें कुछ भी नहीं मिलना चाहिए।"

इस निर्णय को सुनकर राम और श्याम बिगड़ते हुए बोले, "वाह मैनेजर साहब! आपने बहुत अच्छा बंटवारा किया। आपसे तो मोहन ही अच्छा है। वह हम दोनों को एक पपीता तो देर रहा था।"

राम और श्याम की बात सुनकर मैनेजर ने कहा, "देखो, भाई! प्रश्न अच्छे-बुरे का नहीं, बल्कि 'हिसाब का' है। अब तुम्हीं बताओ, तुम्हारे पास एक रोटी थी और श्याम के पास दो। यानी तुम दोनों के पास तीन रोटियां थीं और मोहन के पास भी तीन। यानी तुम दोनों की रोटियों के बराबर रोटी अकेले मोहन के पास थी। बोलो, थी न?"

"जी हां। आप ठीक कह रहे हैं।" राम और श्याम ने एक साथ कहा।

"तुम तीनों की (एक + दो + तीन) मिलाकर कुल छह रोटियां हुईं, जिनको तुम चारों ने बराबर बांटकर खाईं। छह रोटियों को जब चार जगह बांटा गया तो प्रत्येक के हिस्से में डेढ़-डेढ़ रोटी आई। क्यों, आई या नहीं?" मैनेजेर ने पूछा।

"हां, प्रत्येक के हिस्से में डेढ़ रोटी ही आई थी।" इस बार श्याम ने कहा।

मैनेजर उन दोनों को समझाते हुए बोले, "तुम दोनों की (एक+दो) मिलाकर तीन रोटियां हुईं; और (डेढ़+डेढ़) तीन ही तुम दोनों ने खाईं। यानी तुम दोनों की रोटियों में से एक कौर भी उस आदमी ने नहीं खाया। मोहन के पास तीन रोटियां थीं, जिन्हें उन दोनों (मोहन और आगंतुक आदमी) ने मिलकर खाईं। इसलिए हिसाब से तो तुम दोनों को कुछ भी नहीं मिलना चाहिए। इन तीनों पपीतों पर मोहन का ही अधिकार है।"

हिसाब की यह बात सुनकर राम और श्याम चुप हो गए। पूरे पतीते के चक्कर में बेचारों को आधा-आधा पपीता भी नहीं मिला। सच ही कहा :

"आधी छोड़ पूरी को धाए।
न आधी रहे न पूरी पाए।" ❑

—कुमावत भवन, लोकनायक व्यास कॉलोनी, सैनी सदन के पास शास्त्री नगर, जयपुर-302016 (राज.)

खेलें ऐसी होली

—मोहम्मद साजिद ख़ान

आओ अबकी मिलकर खेलें
हम सब ऐसी होली!

जो रोता हो उसे हंसाएं
चेहरे पर मुस्कान खिलाएं
खुशियों का चंदन माथे पर—
मेल-जोल की रोली!

बालश्रम को दूर भगाएं
सबमें नई चेतना लाएं
डटी रहे नित संघर्षों में—
हम बच्चों की टोली!

बहनें भी पढ़ने को जाएं
हम सब उनका हाथ बटाएं
सच्चे-पक्के-नेक इरादे—
मीठी होवे बोली!

अपने अधिकारों को पाएं
मन में नई उमंगें लाएं
भर जाएगी इक दिन अपनी—
आशाओं की झोली!



—मोहल्ला-मंगल बाजार,
कस्बा एवं पोस्ट-इदौली
जिला-बाराबंकी-225411 (उ.प्र.)



फेल हुई स्कीम

—प्रभाकिरण जैन

रोज रात चूहों की फौज
चौके में करती थी मौज।

कूद-कूदकर, उछल-उछलकर
हर बर्तन पर टहल-टहलकर
जो भी मिलता वो खा जाती
मानो आए हों बाराती।

फिर हम झटपट पिंजरा लाए
शायद कुछ चूहे फंस जाएं
लेकिन पलट गया हर पासा
सब चूहे दे भागे झांसा।

मैं, मम्मी और दीदी-भैया
हार गए कर ताता थैया
कोई चूहा पकड़ ना पाए
ऐसे बुद्धू गए बनाए

फेल हो गई पूरी टीम
फेल हो गई हर स्कीम।



—पन्ना भवन, 2/1, अंसारी रोड
दरियागंज, नई दिल्ली-110002

राग और ताल

—कृष्ण कल्कि

संगीत का, खासकर शास्त्रीय संगीत का, जिक्र आते ही जो पहली चीज जेहन में आम गूंजती है वह है—नाना रागों में ढली सुर-लहरियां। संगीत की गहराइयों में कोई डूब सके, न सके... सुरों के जादू का विज्ञान कोई जाने, न जाने... लेकिन रागों के वजूद से इस देश में आम आदमी भी अमूमन अपरिचित नहीं होगा। वजह यह कि संगीत की परंपरा इस देश में आदिमकालीन रही है और सुनी गई हर संगीत-रचना (यहां तक कि लोकप्रिय संगीत भी) किसी-न-किसी रूप में किसी-न-किसी राग में निबद्ध ही रहती आई है। संगीत सुनने का मतलब है रागों को सुनना। अब यह अलग बात है कि सुनकर आम आदमी राग-विशेष के नाम या उसकी छाया या प्रभाव को चाहे पहचान न सके अथवा उसके स्वरात्मक संयोजन की भले ही व्याख्या न कर सके।

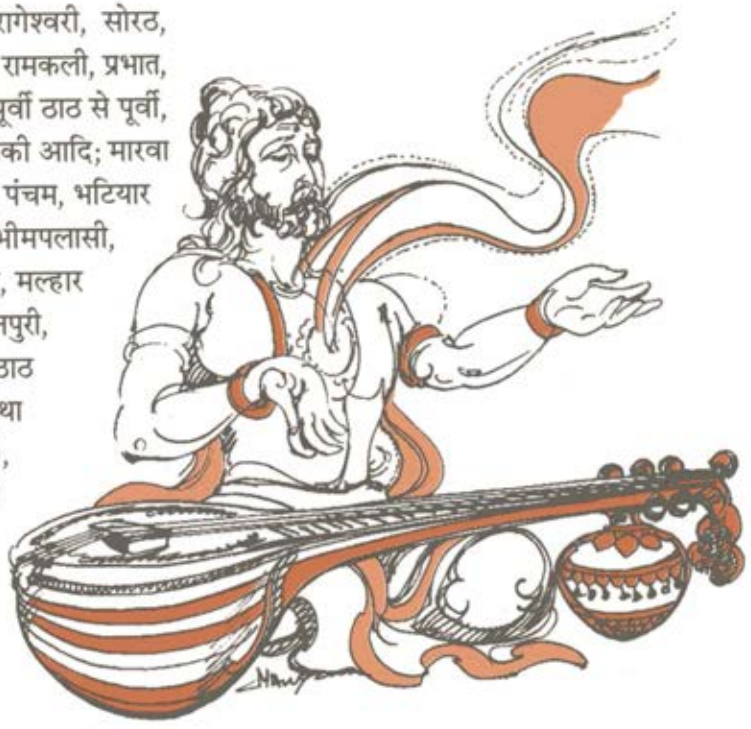
संगीत की प्राचीन भारतीय परंपरा में सिर्फ रागों का ही नहीं, बल्कि रागिनियों यानी रागों की पत्नियों, राग-पुत्रों, राग-पुत्रवधुओं तक का वर्णन मिलता है। इतना ही नहीं, नारद-कृत 'संगीत मकरंद' में पुरुष, स्त्री और नपुंसक के रूप में रागों के लिंग-भेद का भी उल्लेख है। लेकिन यह तब की बात है जब संगीत का वर्गीकरण मतों के अंतर्गत किया जाता था। उस समय प्राचीन 'राग-रागिनी-पद्धति' का बोलबाला था और रागों का वर्गीकरण 'ग्राम और मूर्च्छना प्रणाली' के तहत होता था। जबकि आधुनिक काल में ठाठ-पद्धति का चलन है—हालांकि ठाठों के स्वरूप में भी अब काफी बदलाव आया है। 'ठाठ' दरअसल स्वरों के उस समूह को कहते हैं जिससे राग की रचना होती है। इस तरह नाद से स्वर, स्वरों से सप्तक और सप्तक से ठाठ तैयार होते हैं। प्रत्येक ठाठ में स्वर तो केवल सात ही होते हैं किंतु स्वरों में तीव्र, कोमल का अंतर पड़ सकता है। पहचान के लिए ठाठ से उत्पन्न किसी प्रमुख राग के आधार पर उसका नामकरण कर दिया जाता है।

ठाठों की संख्या भी समय-समय पर बदलती रही है। चौदहवीं शताब्दी में लोचन ने अपने ग्रंथ 'राग-तरंगिणी' में उनकी संख्या जहां 12 बताई है, वहीं 16वीं शताब्दी में रामामात्य ने 'स्वरमेलकलानिधि' में 20 मानी है जबकि 17वीं शताब्दी में वेंकटमुखी ने 'चतुर्दंडिप्रकाशिका' में 72 ठाठों तक का वर्णन किया है। आजकल हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में कुल 10 ठाठों का चलन है—यमन या कल्याण, बिलावल, खमाज, भैरव, पूर्वी, मारवा, काफी, आसावरी, भैरवी, तथा तोड़ी।

इन्हीं ठाठों से आज सभी रागों की उत्पत्ति चिन्हित की जाती है। यमन या कल्याण ठाठ से उत्पन्न प्रमुख राग हैं यमन, कल्याण, भूपाली, चंद्रकांत, हमीर, केदार, कामोद आदि; बिलावल ठाठ से उत्पन्न हैं बिलावल, विहाग, देशकार, पहाड़ी, मांड, नट, दुर्गा आदि; खमाज



ठाठ से खमाज, झिंझोटी, तिलंग, रागेश्वरी, सोरठ, जयजयवंती आदि; भैरव ठाठ से भैरव, रामकली, प्रभात, जोगिया, मेघरंजनी, गुणकली आदि; पूर्वी ठाठ से पूर्वी, जेतश्री, परज, गौरी, त्रिवेणी, वसंत, टंकी आदि; मारवा ठाठ से मारवा, पूरिया, वराटी, ललित, पंचम, भटियार आदि; काफी ठाठ से काफी, सैंधवी, भीमपलासी, पीलू, बागेश्वरी, सहाना, बहार, सारंग, मल्हार आदि; आसावरी ठाठ से आसावरी, जौनपुरी, देसी, गांधार, कान्हड़ा आदि; भैरवी ठाठ से भैरवी, धनाश्री, मालकौंस आदि; तथा तोड़ी ठाठ से तोड़ी (चौदह प्रकार की), मुलतानी आदि। जाति-उपजाति को दृष्टिगत रखते हुए किसी एक ठाठ से 484 राग बन सकते हैं। इस प्रकार सभी ठाठों से कुल 4840 राग तैयार हो सकते हैं। इसके अलावा वादी-संवादी स्वरों में हेर-फेर कर के भी तमाम अन्य राग बनाए जा सकते हैं जिनकी संभावना असीमित है। लेकिन व्यवहार में आज करीब 200 राग ही प्रमुखत: गाए-बजाए जाते हैं।



ठाठ-विशेष से उत्पन्न होने के अलावा किसी राग में कई अन्य बातों का होना भी जरूरी है, जैसे कि—रंजकता, न्यूनतम पांच स्वरों का संयोजन, आरोह-अवरोह, वादी-संवादी स्वर, षड्ज की अनिवार्यता आदि। इन सब को राग के दस लक्षणों के रूप में जाना जाता है जो इस प्रकार हैं—ठाठ, आरोहावरोह, जाति, वादी-संवादी, पकड़, न्यास, पूर्वांग-उत्तरांग, गायन-समय, आविर्भाव-तिरोभाव, तथा रस। संरचना की दृष्टि से रागों के तीन भेद हैं—शुद्ध, छायालग, और संकीर्ण। किसी राग में किसी अन्य राग के स्वर लगने पर भी यदि उनकी छाया न प्रतीत हो तो वह 'शुद्ध राग' कहलाता है, यदि छाया पड़े तो राग को 'छायालग' कहते हैं और यदि राग-विशेष में दो से अधिक रागों का मिश्रण हो तो वह 'संकीर्ण' कहलाता है।

संगीत की दुनिया में राग से कम महत्वपूर्ण नहीं है ताल, क्योंकि वही दरअसल संगीत की भाषा का व्याकरण है। संगीत में काल (समय) को जिस साधन से नापा जाता है, उसे ही भरत मुनि जैसे संगीत-मर्मज्ञों ने 'ताल' कहा है और तालों में उनकी लंबाई को स्पष्ट करने वाली इकाई को 'मात्रा'। मात्रा वस्तुत: ताल का ही हिस्सा है क्योंकि उन्हीं के योग से ताल बनते हैं। ताल चाहे जैसा भी हो, उसमें दस बातें जरूर होती हैं जिन्हें 'ताल के प्राण' कहते हैं—काल, क्रिया, कला, मार्ग, अंग, प्रस्तार, जाति, ग्रह, लय, और यति। यहां 'काल' का तात्पर्य ताल-विशेष की समय-सीमा से है जबकि क्रिया का तात्पर्य ताल-विशेष की मात्राओं को गिनने की प्रक्रिया से। क्रिया दो प्रकार की होती है—पात (सशब्द) और खाली (नि:शब्द)। काल का ऐसा विभाजन जिसके आधार पर मात्राओं के हिस्से तय होते हैं, वह 'कला' कहलाता है। निश्चित काल से युक्त कलाओं के समूह को 'मार्ग' कहते हैं जो चार प्रकार के

होते हैं—ध्रुव, चतुरा, दक्षिणा, और वृत्तिका। ताल-विशेष में समय के जो भिन्न-भिन्न भाग होते हैं और जिन्हें चिन्हों से स्पष्ट किया जाता है, वे 'अंग' कहलाते हैं जो 6 प्रकार के हैं—अणुद्रुत, द्रुत, लघु, गुरु, प्लुत, और काकपद। मात्राओं के नाना संयोजन से विभिन्न तालों की उत्पत्ति यानी उनका फैलाव 'प्रस्तार' कहलाता है। ताल के बोल जितने अक्षर (या लघु-चिन्हित मात्रा) से बनते हैं, उसी के अनुसार जातियां कायम की गई हैं जो पांच प्रकार की हैं—त्र्यश्र (3 मात्रा), चतुरस्र (4 मात्रा), खंड (5 मात्रा), मिश्र (7 मात्रा) तथा संकीर्ण (9 मात्रा)। कोई ताल जिस स्थान से गति को ग्रहण करता है, उसे 'ग्रह' कहते हैं जिसके चार प्रकार हैं—सम, विषम, अतीत, और अनागत। ताल में एक क्रिया से दूसरी क्रिया के बीच के विश्रांति-काल को 'लय' कहते हैं। यह मुख्यत: तीन प्रकार की होती है—विलंबित (धीमी चाल), मध्य (बीच की चाल), और द्रुत (तेज चाल); किंतु संयोजनात्मक दृष्टि से इसके कुछ और भी भेद हैं—अति विलंबित (बहुत धीमी), तिगुन (मध्य से तीन गुनी), चौगुन (मध्य से चार गुनी), अठगुन (मध्य से आठ गुनी), कुआड़ी (मध्य से सवा गुनी), आड़ी (मध्य से डेढ़ गुनी), तथा बिआड़ी (मध्य से पौने दो गुनी)। लय का चाल-क्रम ही 'यति' कहलाता है जिसके 5 प्रकार हैं—समा, स्रोतोगता, मृदंगा, पिपीलिका, और गोपुच्छा।

शास्त्रीय संगीत के दोनों भारतीय स्वरूपों (हिंदुस्तानी व कर्नाटकीय) की ताल-पद्धति में भिन्नता पाई जाती है। कर्नाटकीय संगीत में मुख्य तालें सात हैं—एकताल, अठताल, ध्रुव, मठ, रूपक, झंप, तथा त्रिपुट। इनमें से प्रत्येक की पांच-पांच जातियां होती हैं और प्रत्येक जाति के पांच-पांच भेद। इस प्रकार तालों का स्वरूप कुल 175 प्रकार का हो जाता है। जबकि हिंदुस्तानी संगीत में एक से लेकर तेरह मात्राओं के प्रस्तार से विविध स्वरूप वाले तालों की कुल संख्या 65,535 तक जा पहुंचती है। किंतु यह महज सैद्धांतिक बात है, व्यवहार में काफी कम तालों का प्रयोग होता है जिनमें से प्रमुख हैं—एकताल, त्रिताल, चारताल, कहरवा, दादरा, खेमटा, झप, धमार, दीपचंदी, रूपक, झूमरा, तिलवाड़ा, ब्रह्म, विष्णु, रुद्र, वसंत, झंपा, चित्रा, लक्ष्मी, गणेश, तीव्रा, विक्रम, मणि आदि।

(अगले अंक में—प्रस्तुति की विविध प्रस्तुतियां)

—डी-54, तीसरा तल, मेन बाजार शकरपुर, दिल्ली-110092

शीर्षक बताओ प्रतियोगिता

(मार्च 2005)

नाम ..... आयु .....

पता .....

.....

शीर्षक .....

.....



सपने

—डॉ. अश्वघोष

सपने देखो चाहे जितने
सपनों पर क्यों रोक लगे।

सपने सबको शिक्षा देते
मन की रोज परीक्षा लेते
सपनों से ही भाग्य जगे
सपनों पर क्यों रोक लगे।

जीवन की आशा हैं सपने
परियों की भाषा हैं सपने
सपने होते प्रेम-पगे
सपनों पर क्यों रोक लगे।

सपनों में संसार समूचा
सपने करते कद को ऊंचा
सपने लगते अधिक सगे
सपनों पर क्यों रोक लगे।



—7, अलकनन्दा एनक्लेव, जनरल महादेव सिंह मार्ग
देहरादून-248001 (उत्तरांचल)

विज्ञान मंच

—घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान की एक शाखा है—रसायन विज्ञान। कुछ रोचक एवं उपयोगी सिद्धान्त इसी शाखा की देन हैं। यहां प्रस्तुत हैं ऐसे ही कुछ रोचक प्रश्नों के उत्तर, जो दैनिक जीवन में उपयोगी सिद्ध होंगे।

रबड़ से पेंसिल का निशान क्यों मिट जाता है?

तुम पेंसिल में जो काला सिक्का देखते हो, दरअसल वह ग्रेफाइट और मिट्टी के मिश्रण से बनाया जाता है। ग्रेफाइट, कार्बन का ही एक अपररूप है। लिखते समय ग्रेफाइट एक बल (अवलम्ब) के द्वारा कागज पर चिपक जाता है। रबड़ से रगड़ने पर ग्रेफाइट का स्थान बदल जाता है। कारण, रबड़ का बल कागज के चिपकाने के बल से ज्यादा रहता है। इस प्रक्रिया में कागज तो साफ हो जाता है लेकिन रबड़ काला हो जाता है।

इत्र की सुगंध को कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुंचने में कुछ समय क्यों लगता है?

इत्र में जो अणु होते हैं, उनमें एक प्रकार की गति होती है जिसके कारण वे इधर-उधर टकराते हैं। इस गति को ब्राडनियन-गति कहते हैं। अणुओं की इस गति में थोड़ा-सा समय लग जाता है जिसके फलस्वरूप इत्र की सुगंध कमरे में एक कोने से दूसरे कोने तक कुछ देर में पहुंचती है।

पटाखे चलाने से तेज आवाज क्यों पैदा होती है?

पटाखों में रासायनिक ऊर्जा होती है। जब पटाखे चलाए जाते हैं, तो उनकी रासायनिक ऊर्जा ध्वनि-ऊर्जा में बदल जाती है। यही कारण है कि पटाखे चलाने से तेज आवाज पैदा होती है। उष्मा-ऊर्जा पैदा होने से पटाखों में रोशनी भी होती है तथा गतिज-ऊर्जा पैदा होने से पटाखों के टुकड़े बिखर कर दूर-दूर तक चले जाते हैं।



साबुन के पानी में बुलबुले क्यों बनते हैं?

बच्चो, जब तुम प्लास्टिक की नली में से साबुन के पानी भरे टब में जोर की फूंक मारते हो, तो टब में बहुत सारे बुलबुले निकल कर हवा में उड़ने लगते हैं। ऐसा क्यों होता है? वास्तव में, जब साबुन पानी के साथ मिलता है, तो पानी और साबुन के अणु परस्पर एक फिल्म बनाते हैं। जब तुम फूंक मारते हो, तो हवा इनके बीच से गुजर कर इन्हें फैला देती है और बुलबुलों की उत्पत्ति हो जाती है जो फूंक मारने पर उड़ने लगते हैं।

कमरा गर्म करने के लिए हीटर को छत के पास न रख कर फर्श के निकट ही क्यों रखा जाता है?

वायु में संवहन विधि के द्वारा ही उष्मा का संचरण होता है। यदि हीटर छत के पास रखा जाए, तो हीटर की उष्मा नीचे को नहीं आ पाएगी। (क्योंकि वायु उष्मा की कुचालक है)। जब हीटर को फर्श के निकट रखा जाता है, तो उष्मा संवहन-विधि वायु को गर्म करके पूरे कमरे को गर्म कर देती है।

कभी-कभी गर्मियों में सोडावाटर की बोतलें फट क्यों जाती हैं?

सोडावाटर की बोतलों में कार्बन-डाईऑक्साइड गैस भरी जाती है। गर्मियों में वायुमंडल के ताप में वृद्धि होने के कारण इसका प्रभाव सोडावाटर की बोतलों पर भी पड़ता है। तापान्तर के कारण सोडावाटर की बोतलों में भरी कार्बन-डाईऑक्साइड गैस का दाब भी बढ़ने लगता है। फलस्वरूप, कभी-कभी गर्मियों में सोडावाटर की बोतलें फट जाती हैं। ❑

—115/1, टोडापुर, हेलीमंडी, गुड़गांव-122504 (हरियाणा)





खेल क्विज़

—पारुल बहुगुणा

1. पी.टी. उषा ने 1986 में सियोल में आयोजित एशियाई खेलों में चार स्वर्ण पदक जीते थे पर ओलंपिक में वह सेकेंड के सौवें हिस्से से पिछड़ने के कारण पदक से वंचित रह गई थी। क्या आपको पता है वह किस वर्ष की बात है।
   (क) 1984 में लास एंजलिस में
   (ख) 1980 में मास्को में
   (ग) 1988 में सियोल में
2. कुआलालंपुर में आयोजित एशियाई गोल्फ प्रतियोगिता में एक भारतीय खिलाड़ी ने जबरदस्त वापसी करते हुए खिताब जीत लिया। यह न केवल शीर्ष खिलाड़ियों में पहुंचा बल्कि इसने प्ले आफ में खिताब भी जीता। जरा अंदाजा तो लगाएं कौन हो सकता है।
   (क) जीव मिल्खा सिंह (ख) दिग्विजय सिंह
   (ग) ज्योति रंधावा
3. बंगलादेश में दिसम्बर 2004 में खेली गई टेस्ट शृंखला में *मैन आफ द सीरीज* किसे चुना गया।
   (क) हरभजन सिंह (ख) सचिन तेंदुलकर
   (ग) इरफान पठान
4. किस क्रिकेट खिलाड़ी ने कानपुर में 85 रन की पारी खेल आशाएं जगाईं और बंगलादेश में अपने कैरियर का पहला शतक ठोक डाला। जानते हो तो चुनें :
   (क) विरेंदर सहवाग (ख) गौतम गंभीर
   (ग) आकाश चोपड़ा
5. राजधानी में राष्ट्रपति देश के सफल खिलाड़ियों को अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित करते हैं। गत वर्ष किस खिलाड़ी को अर्जुन पुरस्कार प्रदान किया गया।
   (क) राज्यवर्द्धन सिंह राठौर
   (ख) नीलम जसवंत कौर
   (ग) अंजू बाबी जार्ज
6. हाकी में देश को अब तक कुल कितने स्वर्ण हासिल हुए हैं।
   (क) आठ (ख) चार
   (ग) छह
7. भारत के इस तेज गेंदबाज ने तिकड़ी भी जमाई है और देश-विदेश में भारतीय टीम के लिए शानदार प्रदर्शन किया है पर शारजाह में जब पाकिस्तान को अंतिम गेंद पर एक छक्के की जरूरत थी तो पाक बल्लेबाज जावेद मियांदाद ने इस खिलाड़ी की फेंकी गेंद पर ऐसा छक्का जमाया कि आज तक उस गेंदबाज को उस पराजयदायी छक्के के लिए पहचाना जाता है। आप उस खिलाड़ी को पहचानने की कोशिश करें :
   (क) कपिल देव (ख) मनोज प्रभाकर
   (ग) चेतन शर्मा

उत्तर : 1. (क) 1984 में लास एंजलिस में, 2. (ग) ज्योति रंधावा, 3. (ग) इरफान पठान, 4. (ख) गौतम गंभीर, 5. (ग) अंजू बाबी जार्ज, 6. (क) आठ, 7. (ग) चेतन शर्मा।

—608, महागुन विला, प्लॉट नं. 4/30,
सेक्टर-4सी, वैशाली, गाजियाबाद (उ.प्र.)



दादा साहेब फाल्के पुरस्कार

—सुलोचना गुप्ता

यह पुरस्कार साल में एक बार किसी ऐसी फिल्मी शख्सियत को दिया जाता है जिसने भारतीय सिनेमा के किसी क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया हो। पुरस्कार में नकद राशि के अलावा एक शाल तथा स्वर्णकमल दिए जाते हैं। नकद राशि प्रारंभ में 11 हजार रुपए थी। अब यह 2 लाख रुपए है। यह पुरस्कार भारतीय सिनेमा के जनक दादा साहेब फाल्के के नाम पर दिया जाता है। इसकी शुरुआत उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर सन् 1969 में की गई थी। यह पुरस्कार भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किया जाता है।

आज तक के पुरस्कार विजेताओं की सूची

वर्ष	विजेता का नाम	योगदान का क्षेत्र
1969	देविका रानी	अभिनय और फिल्म निर्माण
1970	बी.एन. सरकार	फिल्म निर्माण (हिंदी-बंगला)
1971	पृथ्वीराज कपूर	फिल्मों तथा नाटकों में अभिनय और पृथ्वी थिएटर्स की स्थापना
1972	पंकज मलिक	गायक, संगीतकार व अभिनेता
1973	सुलोचना (रूबी मायर्स)	अभिनय और फिल्म निर्माण
1974	बी.एन. रेड्डी	छायाकार और फिल्म निर्माता
1975	धीरेन्द्र गांगुली	कवि, लेखक, निर्माता और फिल्म-समीक्षक
1976	कानन देवी	गायिका, अभिनेत्री व फिल्म निर्मात्री
1977	नितिन बोस	निर्माता-निर्देशक (हिंदी-बंगला)
1978	आर.सी. बोराल	पार्श्वगायक तथा संगीतकार (हिन्दी-बंगला)
1979	सोहराब मोदी	अभिनेता और निर्माता
1980	जयराज	अभिनेता
1981	नौशाद	संगीतकार
1982	एल.वी. प्रसाद	तमिल, तेलुगु, कन्नड़ व मलयालम फिल्मों का निर्माण
1983	दुर्गा खोटे	मराठी तथा हिंदी फिल्मों में अभिनय
1984	सत्यजित रे	हिंदी-बंगला फिल्मों के निर्माता। ऑस्कर पुरस्कार पाने वाले पहले भारतीय
1985	व्ही शांताराम	अभिनेता, निर्माता-निर्देशक
1986	बी. नागी रेड्डी	तमिल, तेलुगु, कन्नड़ व मलयालम फिल्मों के निर्माता
1987	राजकपूर	अभिनेता व निर्माता-निर्देशक
1988	अशोक कुमार	अभिनेता
1989	लता मंगेशकर	पार्श्व गायिका
1990	ए. नागेश्वर राव	निर्माता-निर्देशक, अभिनय प्रशिक्षण केंद्र के संस्थापक
1991	भालजी पेंढारकर	निर्माता-निर्देशक
1992	भूपेन हजारिका	निर्माता-निर्देशक-गीतकार व गायक
1993	मजरूह सुल्तानपुरी	गीतकार-गजलकार
1994	दिलीप कुमार	अभिनेता
1995	डॉ. राजकुमार	कन्नड़ फिल्मों के अभिनेता
1996	शिवाजी गणेशन	तमिल फिल्मों के अभिनेता
1997	कवि प्रदीप	गीतकार
1998	बी.आर. चोपड़ा	निर्माता-निर्देशक
1999	ऋषिकेश मुखर्जी	निर्माता-निर्देशक
2000	आशा भोंसले	पार्श्व गायिका
2001	यश चोपड़ा	निर्माता-निर्देशक
2002	देव आनंद	अभिनेता व निर्माता-निर्देशक
2003	मृणाल सेन	निर्माता-निर्देशक

वर्ष 2004 के पुरस्कार की घोषणा होना अभी बाकी है।

हरखू की होली

—शिवनारायण सिंह

किसी गांव में हरखू नाम का किसान रहता था। वह बहुत ही परिश्रमी किसान था। रोज सुबह वक्त पर उठकर स्नान से निवृत्त होकर वह अपने खेत पर जा पहुंचता और खेती के कार्य में जुट जाया करता। परिश्रम ही उसके जीवन का मूल मंत्र था। वह वक्त को कभी भी फालतू बातों में न गंवाता। खेती में अन्न उपजाना, जल से खेत सींचना, फसल आने पर फसल काटकर उसे अन्न भंडार तक पहुंचाने जैसे कार्य वह स्वयं करता आया था। आराम तो वह बहुत ही कम करता था। उसके घर से कुछ ही दूरी पर संतू किसान भी रहता था। संतू किसान का खेत भी हरखू किसान के खेत के समीप ही था। संतू आलसी स्वभाव वाला था। वह खेत पर स्वयं कुछ देर तक ही काम करता। फिर खेत की देखरेख वह नौकरों पर छोड़ दिया करता। नौकर मनमाने ढंग से काम करते। यही कारण था कि उसके खेत पर अधिक फसल न हो पाती थी।

इस बार हरखू का परिश्रम और





भी अधिक रंग लाया था। उसने रात-दिन खेत पर जमकर मेहनत की थी। अपना पसीना बहाया था। उसके खेत पर काफी अच्छी फसल हो गई थी।

हरखू के खेत पर अच्छी फसल हुई देखकर संतू के मन में ईर्ष्या की आग जल उठी। वह दिन-रात सोच रहा था कि इस बार किसी प्रकार से हरखू के खेत की फसल को नुकसान पहुंचा दिया जाए।

होली आ गई थी। संतू ने अच्छा अवसर जानकर होली के बहाने हरखू के खेत में आग लगा देने की योजना बना ली थी। उसने अपने खेत के पास होली जलाने के लिए लकड़ी के बड़े-बड़े कुंदे एकत्र करना आरंभ कर दिए। होली की आग में डालने के लिए गोबर के उपले भी काफी मात्रा में इकट्ठे कर लिए गए थे।

होली की आग काफी विकराल रूप लेकर पास ही हरखू के खेत की फसल चौपट करने का कारण बन जाए इस प्रयास में उसने काफी मात्रा में मिट्टी का तेल भी इकट्ठा कर लिया था।

इधर हरखू ताड़ गया था कि संतू उसके खेत की अच्छी फसल देखकर ईर्ष्या की आग में जल उठा है। वह उसके खेत की फसल चौपट करने हेतु कोई साजिश अवश्य रच रहा है। हरखू ने सोचा, बैर की आग को बैर से बुझाना ठीक नहीं है। बैर की यह आग युक्ति और प्रेमपूर्वक बुझाना ही उचित होगा।

आज होली का त्यौहार था। रात को गांव में दो मुहल्लों की होली जलने वाली थी। हरखू ने बुद्धिमानी से काम लेना उचित समझा। होली जलने से पहले शाम होते ही वह संतू के घर पर जा पहुंचा। वह थाली में नारियल, अक्षत-कुंकुम और ताजा फूल लेकर पहुंचा था। थाली जमीन पर रखकर वह संतू से बोला, ''संतू भाई! थाली में नारियल, अक्षत-कुंकुम लेकर मैं आपको होली पर आमंत्रित करने आया हूं। हम सब मुहल्ले वाले आपका काफी सम्मान

करते हैं। आप गांव के आदरणीय व्यक्ति हैं। हम मुहल्ले वाले चाहते हैं कि इस बार हमारे मुहल्ले की होली आपके कर-कमलों द्वारा जलाई जाए। आप यह आमंत्रण स्वीकार कर लें तो हमें बड़ी प्रसन्नता होगी।''

हरखू द्वारा अपना इतना सम्मान होते देख संतू के मन में जल रही ईर्ष्या की आग अचानक बुझ गई। वह आमंत्रण स्वीकार करते हुए बोला, ''ठीक है, मैं आपके मुहल्ले की होली जलाने के समय आ जाऊंगा।''

संतू ठीक वक्त पर हरखू के मुहल्ले में जा पहुंचा। हरखू के मुहल्ले वालों ने फूलों का हार पहनाकर उसका स्वागत किया और 'संतू चाचा की जय', कहकर हर्षोल्लास प्रकट किया। संतू ने हरखू के मुहल्ले की होली में आग जलाई। होली जल उठी। लोग फूल बरसाने लगे। ढोल बजाने लगे। संतू के नयन बरस पड़े। वह बोला, ''मेरे मन में जल रही ईर्ष्या की होली की आग आपके मुहल्ले की होली जलाकर बुझ गई। सच ही है कि जहां प्रेम-प्रीत के रंग बरसते हों, वहां पर ईर्ष्या की होली भला कैसे जल सकती है।'' ❑

—नियर बी.के. नं. 1651
सेक्शन 26, उलहासनगर-421004,
थाने

(पृष्ठ 32 का शेष)

राजन ने पूछा, ''अंकल, आपने विटामिन संबंधी हमें बड़ी अच्छी जानकारी दी। यह बताइए कि विटामिनों से अधिक से अधिक फायदा लेने के लिए हमें क्या करना चाहिए?''

जवाब में अंकल बोले, ''राजन, सब्जियों को ज्यादा पकाना नहीं चाहिए क्योंकि इससे कुछ विटामिन नष्ट हो जाते हैं। जिस पानी में सब्जियां और दाल पकाई जाती हैं उसे फेंकना नहीं चाहिए क्योंकि बी और सी जैसे पानी में घुलनशील विटामिन इस तरह बहकर नष्ट हो जाते हैं और हमारा शरीर उनसे वंचित हो जाता है। खीरा, मूली, गाजर, हरी मिर्च, टमाटर आदि सब्जियों को सलाद के रूप में लेकर भी शरीर को अधिक से अधिक विटामिन मुहैया कराए जा सकते हैं।''

कहकर रुक गए अनन्य कुलश्रेष्ठ। आज चर्चा में काफी वक्त निकल गया था। इसलिए अंकल से विदा लेकर सभी बच्चे अपने-अपने घरों की ओर जल्दी से चल दिए। ❑

—43, देशबंधु सोसाइटी,
15, पटपड़गंज, दिल्ली-110092

पहेलियां

1. दो अक्षर का मेरा नाम
   चेहरे रंगना मेरा काम,
   बच्चे करते जब भी तंग
   होली पर रहता हूं संग।
2. रंग-बिरंगा एक त्यौहार
   फागुन मास में आता हूं,
   सभी मनाते खुशियां और
   दिल सबके हर्षाता हूं।
3. बुआ ने जिसे जलाया
   उस बालक का नाम बताओ,
   होली मनाते जिसकी याद में
   झटपट अब दिमाग लगाओ।
4. तीन अक्षर की चीज अनूठी
   चेहरे सबके रंग जाती,
   मध्य कटे तो गुल बन जाती
   प्रथम कटे तो लाल कहाती।

उत्तर : 1. रंग, 2. होली, 3. प्रह्लाद, 4. गुलाल

—सत्यनारायण 'सत्य'
समता-भवन के पास, रायपुर
जिला-भीलवाड़ा-311803 (राज.)

स्मृति शेष

नायकों पर भारी खलनायक

—विश्वनाथ गुप्त



क्या आप इस बात पर यकीन करेंगे कि जो व्यक्ति कभी नाटकों में काम करके केवल 100 रुपए प्रति शो लेता था, वही व्यक्ति बाद में फिल्मों में 1 करोड़ रुपए प्रति फिल्म लेने लगा। आप चाहे यकीन करें या न करें लेकिन यह बात है बिल्कुल सच और मजे की बात यह कि वह व्यक्ति कोई नायक न होकर खलनायक था।

फिल्मों के दर्शक यह बात अच्छी तरह जानते हैं कि किसी फिल्म में सबसे ज्यादा महत्व नायक का होता है, लेकिन जिस खलनायक की हम बात कह रहे हैं, वह न केवल फिल्मों में महत्वपूर्ण हो गया, बल्कि बहुत से नायकों पर भारी पड़ गया।

जी हां, जिस खलनायक की चर्चा हम कर रहे हैं—वह हैं अमरीश पुरी। वो आज हमारे बीच नहीं हैं। गत 12 जनवरी को मुंबई में उनका निधन हो गया।

22 जून, 1932 को पंजाब के नौशेरा गांव में जन्मे अमरीश पुरी को अभिनय का शौक स्कूल-कालेज के दिनों से ही था। लेकिन शिमला में कालेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद पहले उन्होंने सरकारी नौकरी की। नौकरी करते-करते ही नाटकों में काम करने लगे। उन्होंने विजय तेंदुलकर, बादल सरकार और सत्यदेव दुबे जैसे प्रसिद्ध रंगकर्मियों के साथ काम किया।

उनकी पहली फिल्म 'रेशमा और शेरा' (1970) थी जिसमें उनकी छोटी-सी भूमिका थी। लेकिन यह तो शुरुआत थी। 39 वर्ष की परिपक्व उम्र में भी फिल्मों में काम शुरू करके वे अपने बड़े भाइयों चमन पुरी और मदन पुरी से काफी आगे निकल गए, हालांकि ये दोनों उनसे बहुत पहले से ही फिल्मों में थे।

अमरीश पुरी ने अपने 34 साल के फिल्मी कैरियर में लगभग 200 फिल्मों में काम किया। इन फिल्मों में उन्होंने तरह-तरह की भूमिकाएं कीं। वे खलनायक तो बने ही, कई नायकों के बाप और दादा भी बने। उनके अभिनय की यह विशेषता थी कि जिस भूमिका को वे निभाते थे उसमें पूरी तरह से डूब जाते थे। जितना अच्छा काम उन्होंने खलनायक के रूप में किया उतना ही अच्छा एक चरित्र अभिनेता और हास्य-अभिनेता के रूप में भी किया। *मेरी जंग, घातक, विरासत, चाची 420, मुस्कुराहट* और *दिल वाले दुल्हनिया ले जाएंगे* जैसी फिल्में इस बात की मिसाल हैं।

यों तो खलनायक के रूप में उन्होंने कई फिल्मों में यादगार भूमिकाएं कीं लेकिन *मिस्टर इंडिया* के 'मोगाम्बो' और *नगीना* के 'तांत्रिक' ने उन्हें सबसे ज्यादा ख्याति दिलाई। मोगाम्बो की भूमिका में उनका तकिया कलाम 'मोगाम्बो खुश हुआ' तो बच्चे-बच्चे की जुबान पर चढ़ गया।

व्यावसायिक फिल्मों के साथ-साथ अमरीश पुरी ने *निशांत, मंथन, भूमिका, अर्द्धसत्य, कलयुग और आक्रोश* जैसी लीक से हटकर बनी फिल्मों में काम किया। हॉलीवुड की दो अंग्रेजी फिल्मों 'गांधी' तथा 'इंडियाना जोन्स एंड द टेम्पल ऑफ डूम' में भी काम किया, लेकिन उनको वास्तविक आनंद हिंदी फिल्मों तथा नाटकों में ही काम करने में आता था।

अमरीश पुरी आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन फिल्मों के एक श्रेष्ठ खलनायक और चरित्र अभिनेता के रूप में जो काम उन्होंने किया, वह हमेशा याद किया जाएगा। फिल्मों के बाहर अपने व्यक्तिगत जीवन में वे बहुत अच्छे इन्सान थे और हर किसी के काम आते थे। यह बात भी लोग कभी भूल नहीं पाएंगे। ❑

नए ग्राहक बनने/सदस्यता के नवीकरण/पता बदलने की सूचना के लिए कूपन

मैं बाल भारती

- ❑ 70 रुपये में एक वर्ष
- ❑ 135 रुपये में दो वर्ष
- ❑ 190 रुपये में तीन वर्ष

के लिए मंगाना चाहता/चाहती हूं। मैं उचित राशि का डिमांड ड्राफ्ट/पोस्टल ऑर्डर/मनीऑर्डर नं.....दिनांक.....भेज रहा हूं/रही हूं। **(उचित बॉक्स पर निशान लगाएं)**

- मेरी वर्तमान सदस्यता.....महीने में समाप्त हो रही है। सदस्यता के नवीकरण के लिए एक वर्ष/दो वर्ष/तीन वर्ष का शुल्क ऊपर दिए विवरण के अनुसार भेज रहा/रही हूं।
- मेरा पता बदल गया है। कृपया अब पत्रिका नीचे दिए पते पर भेजें।

(जो पंक्तियां लागू न हों, उन्हें काट दें।)

हस्ताक्षर .....

नाम.....

पता.....

.....

.....

पिन.....

वर्ग : विद्यार्थी/शिक्षक /संस्था/अन्य

सदस्यता के नवीकरण/पता बदलने की स्थिति में नीचे बने बॉक्स में अपनी सदस्यता संख्या लिखें...

- दिल्ली से प्रकाशित हमारी पत्रिकाएं :
  योजना (अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू, पंजाबी, उड़िया), **आजकल** (हिंदी, उर्दू), **बाल भारती** (हिंदी), **कुरुक्षेत्र** (हिंदी, अंग्रेजी)
- बाल भारती, योजना, आजकल, कुरुक्षेत्र की शुल्क की दरें :
  • **वार्षिक** : 70 रुपये • **द्विवार्षिक** : 135 रुपये • **त्रिवार्षिक** : 190 रुपये
- विदेशी ग्राहकों के लिए उक्त पत्रिकाओं के वार्षिक चंदे की दरें (केवल रुपयों में) :
  • पड़ोसी देश : 500 रुपये • अन्य देश : 700 रुपये
- डिमांड ड्राफ्ट/पोस्टल आर्डर/मनी आर्डर **निदेशक, प्रकाशन विभाग** के नाम सदस्यता कूपन के साथ निम्न पते पर भेजें :
  विज्ञापन तथा प्रसार व्यवस्थापक, ईस्ट ब्लॉक-4,
  लेवल-7, रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली-110066
- कृपया पत्रिका भेजना शुरू करने के लिए हमें 8-10 सप्ताह का समय दें।


किट्टी और खिलौना पिचकारी
किट्टी ! यह प्लास्टिक का खिलौना कहां से ले आई ?
यह खिलौना नहीं रंग की पिचकारी है ।
कथा व चित्र : विनोद भाटिया
देखो ! इसे दबाने से रंग निकलता है ।
अब मैं दादा जी के साथ होली खेल आऊं।


दादा जी!
बाप रे ! किट्टी मेरे साथ होली खेलने आ गई ।
मैं बैडरूम में छिप जाता हूं। जब वह चली जायेगी तब निकल आऊंगा ।
दादी ! दादा जी कहां गये ? दिखाई नहीं दे रहे ।
मैं चुप रहूंगी वर्ना ये लड़की मुझ से उगलवा लेगी ।
अच्छा ! चलती हूं। उन्हें कहीं बाहर ढूंढती हूं।
चली गई !अब किसी बात का डर नहीं ।


ओह!
पिच्च !
होली है ! दादा जी
गुर र र
इधर कुछ बच्चे –
आज होली है ।
खूब जम के खेलेंगे ।
सब पिचकारियां भर लो ।
रंगने के लिए आज किसे पकड़े ?
किट्टी को ।
अपने आप को बड़ी चालाक समझती है। इस बार हमने उसके पीछे जासूस लगा रखे हैं ।


हमारा जासूस किसी भी पल खबर लेकर आता ही होगा ।
यह तुमने बढ़िया उपाय सोचा ।
सब तैयार हो जाओ । किट्टी आ रही है ।
अपनी-अपनी पोजिशन ले लो
श श श जासूस ने खबर दी है कि किट्टी अपनी टोली के साथ यहीं से गुजरेगी ।
होली है!
सारी तैयारी धरी रह गयी ।

चित्र बनाओ प्रतियोगिता

नवम्बर 2004 के पुरस्कृत चित्र

शीर्षक : क्रिसमस ट्री

प्रथम पुरस्कार



चंदा प्रिया (12 वर्ष)
द्वारा श्री सरयुग सिंह
पो. मुनिया थाना-नवगछिया, ग्राम महदत्तपुर
जिला भागलपुर, 853202 (बिहार)

इन्हें दो वर्ष तक 'बाल भारती' मुफ्त भेजी जाएगी।

द्वितीय पुरस्कार



अश्विनी सहारे (13 वर्ष)
एम आई जी 108, ए.डी.ए कालोनी
कालिंदीपुरम,
इलाहाबाद-211011 (उ.प्र.)

इन्हें एक वर्ष तक 'बाल भारती' मुफ्त भेजी जाएगी।

प्रोत्साहन पुरस्कार



मिदहत फातिमा मो. फजलुररहमान (10 वर्ष)
द्वारा मो. इरफान, इरफान आटो सेन्टर
शारदा चौक, यवतमाल

इन्हें तीन माह तक 'बाल भारती' मुफ्त भेजी जाएगी।

आर एन 699/57
डाक रजिस्टर्ड सं. डी.एल.-12034/2003-05
बिना पूर्व भुगतान के साथ आर.एम.एस.
दिल्ली से पोस्ट करने के लिए लाइसेंस यू. (डी.एन.)-56/2003-5

RN 699/57
Postal Regd. No. DL-12034/2003-05
Licenced U (D.N.)-56/2003-5
to post without pre-payment at RMS Delhi





उमाकांत मिश्र, निदेशक, प्रकाशन विभाग, पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001 द्वारा प्रकाशित और मुद्रित।
मुद्रक : तारा आर्ट प्रेस, बी-4 हंस भवन, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष : 23378626, 23379686
संपादक : विभा जोशी